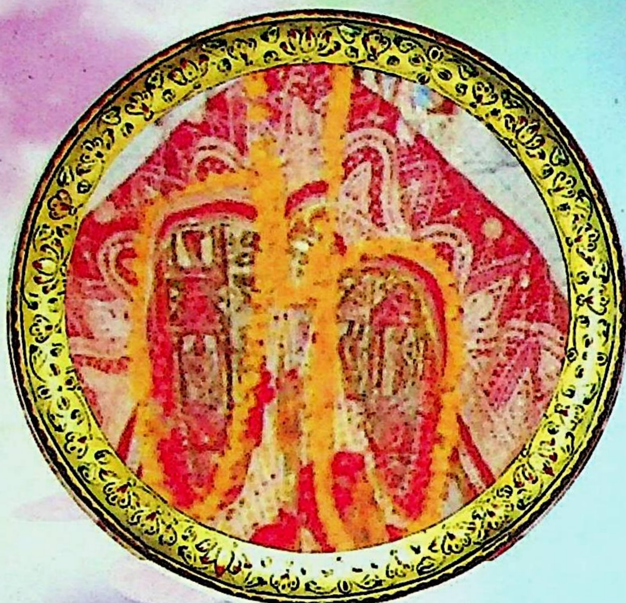
॥ श्री ॥

श्री वनदुर्गापटल

(प्रयोग-साधन का अपूर्व ग्रन्थ)





प्रकाशक :-

मास्टर खेलाड़ीलाल संकटा प्रसाद

कचौड़ीगली, वाराणसी

श्रीवनदुर्गापटल

(प्रयोग-साधन का अपूर्व ग्रन्थ)



श्रीदयाशंकर उपाध्याय

(काशीराज ज्योतिषी)

द्वारा लिखित

पं० श्रीकाशीनाथ झा (विद्यालंकार)

प्रधानाचार्य

रानी चन्द्रावती श्यामा महाविद्यालय

द्वारा

संशोधित तथा परिमार्जित



प्रकाशक

मास्टर खेलाड़ीलाल संकटा प्रसाद

संस्कृत पुस्तकालय

कचौड़ीगली, वाराणसी-१

प्रकाशक

मास्टर खेलाड़ीलाल संकटा प्रसाद

संस्कृत पुस्तकालय

कचौड़ीगली . वाराणसी-१



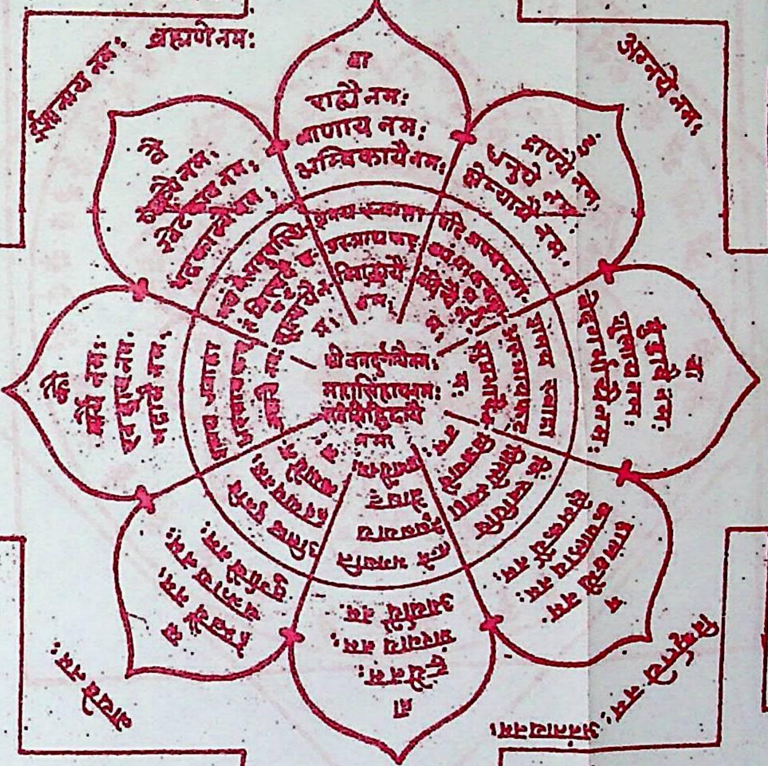


॥ श्री वनदुर्गाया धारणयन्त्रम् ॥



|| श्री वनदुर्गायाः पूजनयन्त्रम् ||

|| ॐ शाँभवि ||



भूमिका

यह वनदुर्गा पटल पुस्तक अतिप्राचीन होने पर भी प्रायः अब तक इसका मुद्रण व प्रकाशन नहीं हो पाया है। यद्यपि आर्त्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी अनुष्ठानी साधक इस ग्रन्थ में लिखित प्रयोगों का अपनी आवश्यकता, रुचि तथा योग्यतानुसार उपयोग करते चले आ रहे हैं और ग्रन्थ के उल्लिखित फलश्रुति की उपादेयता से आकर्षित होकर इसका प्रचार भी बहुतायत से है तथापि तन्त्र-मन्त्रों को गोपनीय रखने के संस्कार वश अब तक परम्परा-प्राप्त लेखों से ही काम चलाये जा रहे थे। इस ग्रन्थ में वैदिक तथा तान्त्रिक दोनों प्रकार के मंत्रों का साथ-साथ सन्निवेश किया गया है। मनुष्यों की अपनी-अपनी प्रकृति तथा रुचि की विभिन्नता के कारण कामनाएँ भी विभिन्न प्रकार की होती हैं। उनकी पूर्ति सौविध्य के लिये इस ग्रन्थ में अनेक प्रकार के प्रयोगों का समावेश किया गया है, इसी से इसकी उपादेयता इतना प्रशस्त है।

इस वाराणसी नगरी के 'मास्टर खेलाड़ीलाल संकटाप्रसाद' एक प्रमुख. व्यवस्थित तथा अति प्रसिद्ध पुस्तक-प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेता नागरिक हैं। बहुत दिनों से इनके यहाँ लोग जिज्ञासा करते चले आ रहे थे कि आपके पास 'वनदुर्गा' पुस्तक है या नहीं। लोगों की अधिकाधिक जिज्ञासा तथा माँग होने से आपकी दृष्टि इस ओर कुछ विशेष आकर्पित हुई। अतएव ये उक्त वनदुर्गा पुस्तक की खोज-अनुसंधान में लगे।

संयोग से इनको एक प्राचीन हस्तलिखित पुस्तक का पता मिला, जिसको आपने प्राप्त किया। प्राचीन लेख क्रमागत हस्तान्तरित होने के कारण उसमें क्वचित् भ्रमात्मक पद तथा अशुद्धियाँ परिलक्षित होने पर आपने मुझसे संशोधन तथा सम्मार्जन कर देने का अनुरोध किया। आपकी सदाशयता से आभारी होकर मैंने उनके अनुरोध को स्वीकार कर लिया। अतएव यथासाध्य अपनी स्वल्प परिज्ञा के अनुसार यंत्र एवं मन्त्रों का संशोधन तथा मार्जन कर दिया है और उसके अतिरिक्त टिप्पणी रूप से एक अनुबन्ध भी संयोजित कर दिया है, जिसमें पुस्तक का परिचय तथा प्रयोग के विपय में आनुपंगिक चर्चा की गई है। संशोधन कर देने पर भी कदाचित् भ्रम, प्रमादादि अथवा कंटक दोपजन्य अशुद्धि वा त्रुटि रह जाने पर सुविज्ञ पाठक कृपया सुधार लेंगे।

अनुबन्ध

इस ग्रन्थ में लिखा है कि, वनदुर्गा को प्रायः सब पुस्तकों में नवदुर्गा नाम से कहा है। उसका हेतु ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे दुर्गा सप्तशती में शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी तथा सिद्धिदात्री इन नव दुर्गाओं का वर्णन है, वैसे ही इस ग्रन्थ में भी प्रभा, माया, जया, सूक्ष्मा, विशुद्धा, नन्दिनी, सुप्रभा, विजया तथा सर्वसिद्धिदा इन नव शक्तियों का वर्णन है। अवान्तर नामों में प्रभेद होने पर भी अन्तिम नवम शक्ति सिद्धिदात्री वा सर्वसिद्धिदा में एकता है। प्रयोग तथा प्रभाव में भी कियदंश में पार्थक्य है। जैसे, प्रत्यंगिरा तथा विपरीत प्रत्यंगिरा के विभिन्न प्रयोग तथा प्रभाव होते हैं। इसी हेतु से प्रायः साधकों ने इसको वनदुर्गा ऐसा सांकेतिक नाम रखा है। नवदुर्गा का 'नव' शब्द के अक्षरों को उलट देने से 'वन' ऐसा रूप हो जाता है। इससे भी वनदुर्गा कहा जाना कदाचित् सम्भव हो सकता है। अस्तु, जिस-किसी कारण से हो किन्तु इस पुस्तक की विशेष प्रसिद्धि वनदुर्गा नाम से ही है। पुरश्चरण के प्रयोग तथा विनियोग ग्रन्थ में ही उल्लिखित हैं। इस पुस्तक के साथ दो यन्त्र हैं। एक तो पूजन के लिये तथा दूसरा स्वाभीष्ट सिद्धि निमित्त गले वा भुजा में धारण करने के लिये हैं। पूजनीय यन्त्र, यथा चित्र, किसी सुवर्ण अथवा ताम्र पत्र पर खोद कर अथवा प्रत्येक किसी शुभ्र शुद्ध पात्र पर रक्तचन्दन वा सिन्दूर से लिखकर यथाविधि पंचोपचार से पूजा कर पुरश्चरण का अनुष्ठान करना चाहिये। गले में धारण करने वाले यन्त्रको, यथा चित्र, भूर्जपत्र पर गोरोचन अथवा रक्तचन्दनादि से शुभ तिथि, वार, नक्षत्र आदि में कामनानुसार लिखकर यथाविधि-विधान से धारण करना चाहिये।

पुरश्चरण-अनुष्ठान की सिद्धि तो मुख्यतया साधक की योग्यता पर निर्भर करता है। साधक प्रथमतः स्वयं पटु एवं कर्मठ हो एवं कामना भी दूषित न हो तभी अनुष्ठान फलप्रद होता है। साधक की योग्यता वा अधिकार के विषय में विशेषतः मैंने स्वरचित 'दुर्गासप्तशती का आध्यात्मिक रहस्य' नामकी पुस्तक के कीलक प्रकरण में विशद रूप से व्याख्या की है। इति-सत्यं शिवं सुन्दरम्।

-श्री काशीनाथ झा

श्यामा मन्दिर, वाराणसी।

'श्रीवनदुर्गा' महाविद्या-तन्त्र-ज्ञातंव्य :–

श्रीवनदुर्गायै नमः। श्रीदक्षिणामूर्त्यै नमः

सद्यश्छिन्नशिरःकृपाणमभयं हस्तैर्वरं बिभ्रतीं,
घोरास्यां शशिशेखरां त्रिनयनामुन्मुक्तकेशावलीम् ।
सृक्कासृग्प्रवहां श्मशाननिलयां श्रुत्योः शवालङ्कृतीं,
श्यामाङ्गीं कृतमेखलां शवकरैर्देवीं भजे कालिकाम् ॥

विदितोऽयं विद्वद्भिर्भवद्भिः 'मुण्डमालायाम्' दशमहाविद्याः प्रदर्श्यन्ते।

काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी ।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा ॥ १ ॥
बगला सिद्धिविद्या च मातङ्गी कमलात्मिका ।
एता दश महाविद्याः सिद्धिविद्याः प्रकीर्तिताः ॥ २ ॥

तथा च- भैरव उवाच-

अस्ति गुह्यतमं ह्येतज्ज्ञानमेकं सनातनम् ।
अतीव हि सुगोप्यं च कथितुं नैव शक्यते ॥ १ ॥
अतीव मत्प्रियाऽसीति कथयामि तव प्रिये ।
सर्वं ब्रह्ममयं ह्येतत् संसारं स्थूलसूक्ष्मकम् ॥ २ ॥
प्रकृतिं तु विना नैव संसारमुपपद्यते ।
तस्माच्च प्रकृतेर्मूलकारणं नैव दृश्यते ॥ ३ ॥
रूपाणि बहुसङ्ख्यानि प्रकृतेरस्ति भामिनि ।
एषां मध्ये महेशानि कालीरूपं मनोहरम् ॥ ४ ॥
विशेषतः कलियुगे नराणां भुक्तिमुक्तिदम् ।
तस्या उपासकाश्चैव ब्रह्म-विष्णु-शिवादयः ॥ ५ ॥
इन्द्रः सूर्यश्च वरुणः कुबेरोऽग्निस्तथाऽपरः ।
दुर्वासाश्च वशिष्ठश्च दत्तात्रेयो बृहस्पतिः ॥ ६ ॥
बहुना किमिहोक्तेन सर्वे देवा उपासकाः ।
कालिकायाः प्रसादेन भुक्तिमुक्त्यादिभागिनः ॥ ७ ॥

(स्पष्टार्थाः)

प्रिय सज्जनो !

इस-'श्रीवनदुर्गा' महाविद्या-तन्त्र शास्त्र के उपासकों को 'किन्न सिद्ध्यति भूतले'। यद्यपि मनुष्य का शरीर अनित्य है तथापि दुर्लभ भी है, अनेक जन्मों

के उपरान्त तथा बड़े पुण्यों के उदय होने पर तो कहीं मिलता है। मनुष्य का देह पाकर यदि कुछ 'उपासना' न की गयी तो महा मूर्खता है। यह पुरुषार्थ (मुक्ति) का साधन है। जिसके लिये सदैव मृत्यु का मुख सन्निकट है, ऐसे क्षणभंगुर मनुष्य का शरीर पाकर उसके छूटने के पहले ही अगर कुछ न किया गया तो 'अजागलस्तनस्येव' के सदृश जीवन व्यर्थ है। समाजरूपी वृक्ष की जड़ गृहस्थ ही है. अतः अपने कर्त्तव्यों का पालन नियमित रूप से इस करालकलिकाल में अवश्य करते रहें। इसके प्रभाव से सर्वजनों का कल्याण होगा।

मैंने इस 'वनदुर्गा' महाविद्या को सन् १९२७ ई० में अपने तन्त्र-शास्त्र के परम गुरु श्री १००८ श्री स्वामी रामेश्वराश्रम 'कालानन्दजी महाराज' नगवा-वाराणसी, से पुरश्चरण आदि विधि का ज्ञान प्राप्त किया है। तत्पश्चात् 'युग्म' यन्त्रों का निर्माण सन् १९३५ ई० में वैकुण्ठवासी महाराजाधिराज श्री आदित्यनारायणसिंहजू देव बहादुर 'काशी नरेश' के स्वयं उपयोग के लिये किया। महाराज तन्त्र-शास्त्र के बड़े मर्मज्ञ थे। उस उक्त पुरस्कार-स्वरूप महाराज से मुझे ११०० रु० (चाँदी का सिक्का) सादर प्राप्त हुए।

इस प्रकार ३६ वर्षों का 'प्रयोग' अनुभव इस 'महाविद्या' के प्रति मेरा है। वास्तव में 'चण्डी-पाठ' यही है। मुझे 'विन्ध्याचल' के 'पण्डा' परम तान्त्रिक स्वर्गीय श्री समुद्र प्रसाद जी से भी इस विषय में सहायता मिली है। उनके पास की अनेक हस्तलिखित पुस्तकें मुझे मिली हैं-जिन्हें मुझ पर प्रसन्न होकर उन्होंने दी है। उनका मैं कृतज्ञ हूँ, वे सिद्ध महापुरुष थे, मेरे ऊपर उनकी बड़ी कृपा थी, मैं उनका सदैव ऋणी हूँ।

इस पुस्तक के प्रकाशन की कामना बहुत पहले ही से थी, परन्तु अनेक विघ्न-बाधाओं के कारण अब तक न हो सका। संयोगवश इसके मुद्रण एवं प्रकाशन का भार सर्वदा के लिए वाराणसी के प्रमुख संस्कृत पुस्तक-प्रकाशक तथा विक्रेता 'मास्टर खेलाड़ीलाल संकटाप्रसाद, संस्कृत पुस्तकालय' के संचालक श्री अर्जुनसिंह जी यादव ने उठा लिया है। इस प्रयास के लिये मैं उनको धन्यवाद देता हूँ। शुभमस्तु।

विद्वज्जनानुरागी-

दयाशंकर उपाध्याय

रामनगर, वाराणसी

श्रीवनदुर्गायै नमः

श्रीवनदुर्गापुरश्चरणविधिः

(श्रीवनदुर्गामन्त्रः[1])

उत्तिष्ठ पदमाभाष्य पुरुषि स्यात् पदं ततः ।
पितामहः स नेत्रे नः स्वपिषि स्याद्भयं च मे ॥
समुपस्थितमुच्चार्य यदि शक्यमनन्तरम् ।
अशक्यं वा पुनस्तन्मे वदेद् भगवतीं ततः ॥

(मूलमन्त्रः)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं उत्तिष्ठ पुरुषि किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा ।

वेदलक्षजपात् सिद्धिः।

इस मंत्र को चार लाख जपने से मंत्र की सिद्धि होती है।

नवदुर्गात्मकचामुण्डामन्त्रपुरश्चरणम्

शमयाग्निवधूः सप्त त्रिंशद्वर्णात्मको मनुः ।
ऋषिरारण्यकश्छन्दोऽप्यत्यनुष्टुबुदाहृतम् ॥
देवता वनदुर्गा स्यात् सर्वदुर्गविमोचनी ।
षड्भिश्चतुर्भिरष्टाभिरष्टाभिः षड्भिरिन्द्रियैः ॥
मन्त्रार्णैरङ्गक्लृप्तिः स्याज्जातियुक्तैर्यथाक्रमम् ।

---

१. प्रायः सर्वेषु पुस्तकेषु वनदुर्गेत्यत्र नवदुर्गेत्युपलभ्यते।

[अथ पुरश्चरणम्]

[अथ विनियोगः]

श्रीगणेशाय नमः । ॐ अस्य श्रीवनदुर्गामन्त्रस्य भगवान् आरण्यत्रऋषिः, अत्यनुष्टुप्छन्दः, श्रीवनदुर्गादेवता, दुँ बीजं, स्वाहा शक्तिः, सर्वदुर्गविमोचनार्थे जपे विनियोगः ।

[अथ ऋष्यादिन्यासः]

शिरसि आरण्यत्रऋषये नमः । मुखे अत्यनुष्टुप्छन्दसे नमः । हृदि श्रीवनदुर्गादेवतायै नमः । गुह्ये दुँ बीजाय नमः । पादयोः स्वाहा शक्त्यै नमः ।

[अथ करन्यासः]

उत्तिष्ठ पुरुषि अंगुष्ठाभ्यां नमः । किं स्वपिषि तर्जनीभ्यां नमः। भयं मे समुपस्थितं मध्यमाभ्यां नमः । यदि शक्यमशक्यं वा अनामिकाभ्यां नमः । तन्मे भगवति कनिष्ठिकाभ्यां नमः । शमय स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

[अथाऽङ्गन्यासः]

उत्तिष्ठ पुरुषि हृदयाय नमः । किं स्वपिषि शिरसे स्वाहा । भयं मे समुपस्थितं शिखायै वषट् । यदि शक्यमशक्यं वा कवचाय हुम् । तन्मे भगवति नेत्रत्रयाय वौषट् । शमय स्वाहा अस्त्राय फट् ।

[अथ ध्यानम्]

सौवर्णाम्बुजमध्यगां त्रिनयनां सौदामिनीसन्निभाम्,
चक्रं शङ्खवराभयानि दधतीमिन्दोः कलां बिभ्रतीम् ।
ग्रैवेयाङ्गदहारकुण्डलधरामाखण्डलाद्यैः स्तुतां,
ध्यायेद्विन्ध्यनिवासिनीं शशिमुखीं पार्श्वस्थपञ्चाननाम् ॥
एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं चतुष्कं तद्दशांशतः ।
जुहुयाद्धविषा मन्त्री शालिभिः सर्पिषा तिलैः ॥

इस प्रकार ध्यान कर चार लाख मंत्र का जप पूरा हो जाने पर चावल, तिल तथा घृत का शाकल्य बनाकर मंत्र का दशांश अर्थात् चालीस हजार मंत्र से हवन करना चाहिये।

[अथ पूजायन्त्रम्]

यन्त्र निर्माण की विधि भूमिका में लिख दी गयी है। उसी यंत्र पर देवी का आवाहन तथा पूजन करना चाहिये।

प्रागीरिते यजेत्पीटे देवीमङ्गादिभिः सह।
अङ्गपूजा यथापूर्वं दलमूलेष्विमां यजेत्॥
आर्या दुर्गा च भद्राख्या भद्रकाली ततोऽम्बिका।
क्षेम्यान्या वेदगर्भाख्या क्षेमंकर्यष्टशक्तयः॥
अस्त्राणि पत्रमध्येषु शंखचक्रासिखेटकान्।
बाणकोदण्डशूलानि कपालं तानि पूजयेत्॥
ब्रह्माद्याः स्युर्दलाग्रेषु लोकपालास्ततः परम्।
सिद्धमन्त्रः प्रयोगेषु देवीमित्थं प्रपूजयेत्॥
पीठमित्थं यजेत्सम्यक् नवशक्तिसमन्वितम्।
प्रभा माया जया सूक्ष्मा विशुद्धा नन्दिनी पुनः॥
सुप्रभा विजया सर्वसिद्धिदा नवशक्तयः।
अज्भिर्हस्वत्रयक्लीबरहितैः पूजयेदिमाः॥
प्रणवानन्तरं वज्रशंखदंष्ट्रायुधाय च।
महासिंहाय वर्मास्त्रनतिःसिंहमनुर्मतः॥
दद्यादासनमेतेन मूर्तिं मूलेन कल्पयेत्।
तस्यां संपूजयेन्मूर्तौ देवीमावाह्य मन्त्रवित्॥

इति श्रीवनदुर्गापुरश्चरणविधिः समाप्तः। शुभम्।

श्रीगणेशाय नमः। श्रीवनदुर्गायै नमः। श्रीदक्षिणामूर्त्तये नमः।

ॐ हरिः। ॐ अस्य श्रीवनदुर्गामहाविद्यामन्त्रस्य किरातरूपधर ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, अन्तर्यामी नारायणकिरातरूपधर ईश्वरो

वनदुर्गा गायत्रीदेवता दुँ बीजं स्वाहा शक्तिः क्लीं कीलकं मम धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः ।

यहाँ अपनी कामना के अनुसार संकल्प करना चाहिये।

हंसिनी हाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । शंखिनी हीं तर्जनीभ्यां स्वाहा । चक्रिणी हूँ मध्यमाभ्यां वषट् । गदिनी हूँ अनामिकाभ्यां हूँ । शरिणी हौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । त्रिशूलधारिणी हः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । हंसिनी हाँ हृदयाय नमः । शंखिनी हीं शिरसे स्वाहा । चक्रिणी हूँ शिखायै वषट् । गदिनी हैं कवचाय हूँ । शरिणी हौं नेत्रत्रयाय वौषट् । त्रिशूलधारिणी हः अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवः स्वरों, इति दिग्बन्धः।

[अथ ध्यानम्]

अरिशंखचक्रकृपाणखेटबाणान्
सधनुःशूलकर्त्तरीदधानाम् ।
भजतां महिषोत्तमाङ्गसंस्थाम्
नवदूर्वासदृशीं श्रियेऽस्तु दुर्गाम् ॥१॥
हेमप्रख्यामिन्दुखण्डांशुमौलिं
शंखारिष्टां भीतिहस्तां त्रिनेत्राम् ।
हेमाब्जस्थां पीतवर्णां प्रसन्नां
देवीं दुर्गां दिव्यरूपां नमामि ॥२॥

ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै । तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै । ॐ शान्तिः । शान्तिः । शान्तिः । ॐ हरिः । ॐ हरिः ।

[अथ पञ्चपूजा]

पंचोपचार पूजा की विधि वा न्यास।

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि । इत्यङ्गुष्ठकनिष्ठिकाभ्यां स्पर्शः । ॐ हँ आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि । इत्यङ्गुष्ठकनिष्ठिकाभ्यां स्पर्शः । ॐ यँ वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि । इत्यङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां

स्पर्शः । ॐ रँ अग्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि । मध्यमाङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां स्पर्शः । ॐ वँ अमृतात्मकं अमृतनैवेद्यं समर्पयामि । अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां स्पर्शः । ॐ सँ सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि । इति सर्वाङ्गुलीभ्यः स्पर्शः । सर्वं ब्रह्म ब्रह्मेति ।

[अथ मूलमन्त्रः]

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं उत्तिष्ठ पुरुषि किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा । वेदलक्षजपात् सिद्धिः मन्त्रराजो भवत्यलम् ।

ॐ नमश्चण्डिकायै । ॐ नमश्चण्डिकायै ।
हेतुकं पूर्वपीठे तु आग्नेय्यां त्रिपुरान्तकम् ।
दक्षिणे चाग्नि वेतालं नैर्ऋत्यां यमजिह्वकम् ॥
कालाख्यं वारुणे पीठे वायव्यां च करालिनम् ।
उत्तरे एकपादं तु ईशान्यां भीमरूपिणम् ॥
आकाशे तु निरालम्बं पाताले वडवानलम् ।
यथा ग्रामे तथाऽरण्ये रक्ष मां बटुकस्तथा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं क्ष्म्रूँ बँ वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ॐ ह्रीं क्रौं वषट् स्वाहा ।

इस प्रकार संकट, आपदा निवारण के लिये बटुक भैरव का अनुष्ठान करना चाहिये।

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥
ॐ ह्रीं श्रीं दुँ दुर्गायै नमः ।

प्रयोगविषये । ब्रह्माण्यै नमः । वारुणि खल्वि माहेश्वर्य्यै नमः । कुलवासिन्यै नमः । जयन्ती पुरलाहि वासहिण्यै नमः । अष्टमहाकालिमाहेश्वर्य्यै नमः । चित्रकूट इन्द्राण्यै नमः । त्रिपुर-ब्रह्मचारिण्यै नमः । एकवृक्षशुभिण्यै महालक्ष्म्यै नमः । त्रिपुरहर-

ब्रह्माण्डनायिकयै नमः । एतानि क्षँ क्षँ त्रैलोक्यवशंकराणि बीजाक्षराणि ॐ ह्रीं कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा । ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सकलनरमुखभ्रमरीं । ॐ क्लीं ह्रीं सकलराजमुखभ्रमरीं । ॐ क्रौं सौं सकलदेवतामुखभ्रमरीं ।ॐ क्लीं क्लींसकलकामिनीमुखभ्रमरीं । ॐ ईं सौं सकलदेशमुखभ्रमरीं । ह्स्फ्रें ह्त्रौं ह्स्फ्रें २ त्रैलोक्यचित्तभ्रमरीं । ॐ क्षँ क्षाँ क्षिँ क्षीँ क्षुँ क्षूँ क्षेँ क्षैँ क्षोँ क्षौँ क्षँ क्षः । उग्रभैरवादि-भूत-प्रेत-पिशाचचित्तभ्रमरीं । हुँ क्षुँ हुँ क्लीं राजमन्त्रयन्त्रभ्रमरीं । हुँ क्षुँ हुँ क्लीं सिद्धमन्त्रयन्त्रतन्त्रभ्रमरीं । हुँ क्षुँ हुँ क्लीं साध्यमन्त्रयन्त्रतन्त्रभ्रमरीं । ॐ हुँ क्षुँ हुँ क्लीं सकलसुरासुरसर्वमन्त्रयन्त्रतन्त्रभ्रमरीं । ॐ सर्वक्षोभिणी सर्वक्लेदिनी सकलमनोन्मादकरी । ॐ आँ ह्रीं आँ क्लीं ॐ ह्रीं रक्तचामुण्डे तुरु तुरु अमुकस्य मम वाञ्छिताकर्षिणि ॐ आँ ह्रीं क्रीं परमकल्याणि महायोगिनी ॐ ।

ॐ महाविद्यां प्रवक्ष्यामि महादेवेन निर्मिताम् ।
चिन्तितां किरातरूपेण मातृणां हृदि नन्दिनीम् ॥
उत्तमा सर्वविद्यानां सर्वभूतवशङ्करी ।
सर्वपापक्षयंकारी सर्वशत्रुनिवारिणी ॥

ॐ कुलकरी गोत्रकरी धनकरी धान्यकरी बलकरी यशस्करी विद्याकरी उत्साहबलवर्द्धिनी भूतानां विजृम्भिणी स्तम्भिनी मोहिनी विद्राविणी सर्वमन्त्रप्रभञ्जिनी सर्वविद्याप्रभेदिनी सर्वज्वरोत्सादकरी एकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं अर्द्धमासिकं मासिकं द्विमासिकं त्रिमासिकं षाण्मासिकं सांवत्सरिकं वातिकं पैत्तिकं श्लैष्मिकं सान्निपातिकं सततज्वरं शीतज्वरं उष्णज्वरं विषमज्वरं तापज्वरं च गण्डमाला लूतातालुवर्णानां त्रासिनी सर्वान् त्रासिनी शिरःशूल-अक्षिशूल-कर्णशूल-दन्तशूल-बाहुशूल-हृदयशूल-कुक्षिशूल-वक्षशूल-गुदशूल-गुल्मशूल-लिङ्गशूल-योनिशूल-पादशूल-सर्वाङ्गशूल-विस्फोटकप्रभेदिनी आत्मरक्षा पररक्षा प्रत्यक्षरक्षा अग्निरक्षा

अघोररक्षा वायुरक्षा उदकरक्षा महान्धकारोल्का विद्युदनिलचौरशस्त्रेभ्यो मां रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा ।

[ॐ कार्त्तवीर्यार्जुनाय नमः]

चोरी हुई वा खोई वस्तु-प्राप्ति के निमित्त कार्तवीर्यार्जुन का अनुष्ठान करना चाहिये ।

ॐ नमो भगवते कार्त्तवीर्यार्जुनाय महाभुजपरिवाराय सप्तद्वीपास्मद्विलुम्पकान् चौरान् दशदिक्षु बन्ध बन्ध चौरान् धरित्रीं धरित्रीं ठँ ठँ ठँ ॐ फ्रों चीं क्लीं भ्रूँ आँ ह्रीं क्रों श्रीं हूँ फट् स्वाहा । महादेवस्य तेजसा भंयकरारिष्टदेवतां बन्धयामि स्वाहा । पन्थानुगतचौराद्रक्ष तेषां बाधकस्य करवालं बन्धयामि । महादेवस्य पञ्चशीर्षेण पाणिना महादेवस्य तेजसा सर्वशूलान् कलहपिङ्गलेन कण्टकमयूररुद्राङ्गी । ॐ अँ आँ मातङ्गी । इँ ईँ मातङ्गी । उँ ऊँ मातङ्गी । ऋँ ॠँ मातङ्गी । लृँ ॡँ मातङ्गी । एँ ऐँ मातङ्गी । ओँ औँ मातङ्गी । अं अः मातङ्गी । स्वर स्वर ब्रह्मदण्डं विस्वर विस्वर रुद्रदण्डं प्रज्वल प्रज्वल वायुदण्डं प्रहर प्रहर इन्द्रदण्डं भक्ष भक्ष निर्ऋतिदण्डं हिलि हिलि यमदण्डं नित्योपवादिनि हंसिनि शंखिनि चक्रिणि गदिनि शूलिनि त्रिशूलधारिणि हूँ फट् स्वाहा । ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।

आयुर्विद्यां च सौभाग्यं धान्यं च धनमेव च ।
सदा शिवं पुत्रवृद्धिं देहि मे चण्डिके शुभे ॥
अथातो मन्त्रपदानि भवन्ति ।

ॐ छायायै स्वाहा । चतुरायै स्वाहा । हली स्वाहा । हलि हली स्वाहा । हिली स्वाहा । हिली स्वाहा । पिली स्वाहा । पिलि पिली स्वाहा । हरं स्वाहा । हर हरं स्वाहा । गन्धर्वाय स्वाहा । गन्धर्वाधिपतये स्वाहा । यक्षाय स्वाहा । यक्षाधिपतये स्वाहा । रक्षसे स्वाहा । रक्षाधिपतये स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । ॐ भुवः स्वाहा ।

ॐ स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वाहा । उल्कामुखी स्वाहा । भद्रमुखी स्वाहा । रुद्रमुखी स्वाहा । रुद्रजटी स्वाहा । ब्रह्मविष्णुरुद्रतेजसे स्वाहा । या इमा भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-नवग्रह-भूत-वेताल-शाकिनी-डाकिन्यः कूष्माण्ड-वासवश्चत्वारो राजपुत्र-राजपुरुष-कालपुरुषो वा तेषां दिशं बन्धयामि । दुर्द्विषो बन्धयामि । हस्तौ बन्धयामि । चक्षुषी बन्धयामि । श्रोत्रे बन्धयामि । जिह्वां बन्धयामि। घ्राणं बन्धयामि । मुखं बन्धयामि । बुद्धिं बन्धयामि । गतिं बन्धयामि । मतिं बन्धयामि । अन्तरिक्षं बन्धयामि । आकाशं बन्धयामि । पातालं बन्धयामि ।

ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा ।

शत्रु से विवाद होने से उपर्युक्त बगलामुखी देवता का अनुष्ठान करना चाहिए।

ॐ ह्रीं तेजो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रा विश्वा भुवना विवेश तस्मै नमो रुद्राय नमो अस्तु स्वाहा । यममुखेन पञ्चयोजन-विस्तीर्णं रुद्रो वध्नातु रुद्र-मण्डलं रुद्रः सह परिवारो देवता प्रत्यधिदेवतासहितं रुद्रमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौर-सर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रव नाशय । ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ श्रीं क्लीं ब्लूँ फ्रों फ्रीं आँ ह्रीं क्रों हूँ फट् स्वाहा ।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।

सुवृष्टि के लिए अनुष्ठान नीचे के अनुसार करना चाहिए।

वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः । रोहन्तु सर्वबीजान्यवब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः । ॐ नमो भगवते रुद्राय। प्राच्यां दिशि इन्द्रो देवता ऐरावतारूढो हेमवर्णो वज्रहस्तो इन्द्रो बध्नातु

इन्द्रमण्डलं इन्द्रः सह परिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितं इन्द्रमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निसर्वोपद्रवनाशनाय । ॐ ह्रौं ह्रीं हूँ श्रीं क्लीं ब्लूँ फ्रौं आँ ह्रीं क्रौं हूँ फट् स्वाहा ।

इन्द्र वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः ।अस्माकमस्तु केवलः। वर्षन्तु ते० ।। अवब्रह्मद्विषो जहि० ।।२।। ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ।। ॐ नमो भगवते रुद्राय ।

आग्नेय्यां दिशि अग्निर्देवता मेषारूढो रक्तवर्णो ज्वालाहस्तोऽग्निर्बध्नातु अग्निः सह परिवारो देवता प्रत्यधिदेवतासहितं अग्निमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय । ॐ ह्राँ ह्रीं हूँ श्रीं क्लीं ब्लूँ फ्रौं आँ ह्रीं क्रौं हूँ फट् स्वाहा ।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसः । अस्य यज्ञस्य सुक्रतम् ।।२।। वर्षन्तु ते०। अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः । ॐ नमो भगवते रुद्राय ।

याम्यां दिशि यमो देवता महिषारूढो नीलवर्णो दण्डहस्तो यमो बध्नातु यममण्डलं यमः सह परिवारो देवता-प्रत्यधिदेवतासहितं यममण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय ।

ॐ ह्राँ ह्रीं हूँ श्रीं क्लीं फ्रौं आँ ह्रीं क्रौं हूँ फट् ।

यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः । समर्ठ. यज्ञो गच्छत्यग्निं अलंकृतः ।।१।। वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः । ॐ नमो भगवते रुद्राय ।

नैर्ऋत्यां दिशि निर्ऋतिर्देवता नरारूढो नीलवर्णो खड्गहस्तो निर्ऋतिर्बध्नातु निर्ऋतिमण्डलं निर्ऋतिसहपरिवारो देवता-प्रत्यधिदेवतासहितं निर्ऋतिमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निसर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ हाँ ह्रीं हूँ श्रीं क्लीं ब्लूँ फ्रौं आँ ह्रीं क्रौं हूँ फट् स्वाहा।

ॐ मोषुणः परापरा निर्ऋतिर्दुहणावधीत् यदीष्टतृष्णया सह ॥१॥ वर्षन्तु ते०। अवब्रह्मद्विषो जहि० ॥२॥ ॐ नमो भगवते०। ॐ नमो भगवते०।

वारुण्यां दिशि वरुणो देवता मकरारूढः श्वेतवर्णः पाशहस्तो वरुणो बध्नातु वरुणमण्डलं वरुणं सह परिवारो देवता प्रत्यधिदेवतासहितं वरुणमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सह परिवारः सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ हाँ ह्रीं हूँ श्रीं क्लीं ब्लूँ फ्रौं आँ ह्रीं क्रौं हूँ फट् स्वाहा।

हरिः ॐ इमं मे व्वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके ॥१॥

तत्त्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुशतट्ं समान ऽआयुः प्रमोषीः ॥२॥ वर्षन्तु०। अवब्रह्मद्विषो जहि०। ॐ नमो भगवते०। ॐ नमो०।

वायव्यां दिशि वायुर्देवता मृगारूढो धूम्रवर्णो ध्वजहस्तो वायुर्बध्नातु वायुमण्डलं वायुः सह परिवारो देवता प्रत्यधिदेवतासहितं वायुमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय। ॐ हाँ ह्रीं हूँ श्रीं क्लीं ब्लूँ फ्रौं आँ ह्रीं क्रौं हूँ फट् स्वाहा।

ॐ तव वायुबृहस्पते त्वष्टुर्जामातरद्भुत आवाश्वावृणीमहे ॥२॥ वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो भगवते० ।

ॐ कौबेर्य्यां दिशि कुबेरो देवता अश्वारूढः पीतवर्णो गदाङ्कुशहस्तो कुबेरो बध्नातु कुबेरमण्डलं कुबेरः सह परिवारो देवता-प्रत्यधिदेवतासहितं कुबेरमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंह-व्याघ्राग्निसर्वोपद्रवनाशनाय । ॐ हाँ ह्रीं हूँ श्रीं क्लीं ब्लूँ फ्रों आँ ह्रीं क्राँ हूँ फट् स्वाहा ।

ॐ सोमो धेनुर्ठ. सोमो अर्वन्तु माशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददातु । सादन्यं विदतर्ठ. सभेयं पितृश्रवणं ददाशदस्मै ॥१॥ वर्षन्तु० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो भगवते० ।

ऐशान्यां दिशि ईशानो देवता वृषारूढः स्फटिकवर्णस्त्रिशूलहस्त ईशानो बध्नातु ईशानमण्डलम् ईशानः सह परिवारो देवता प्रत्यधिदेवतासहितम् ईशानमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय ॐ हाँ ह्रीं हूँ श्रीं क्लीं ब्लूँ फ्रों आँ ह्रीं क्रों हूँ फट् स्वाहा ।

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे व्वयम् । पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥१॥ वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो भगवते० ।

ॐ ऊर्ध्वायां दिशि ब्रह्मा देवता हंसारूढो रक्तवर्णः कमण्डलुहस्तो ब्रह्मा बध्नातु ब्रह्ममण्डलं ब्रह्मा सह परिवारो देवता प्रत्यधिदेवतासहितं ब्रह्ममण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय ॐ हाँ ह्रीं हूँ श्रीं क्लीं ब्लूँ फ्रों आँ ह्रीं क्रों हूँ फट्

स्वाहा ।

ॐ ब्रह्मा देवानां पदवी कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणां श्येनो गृद्ध्राणां स्वधितिर्वनानार्ठ. सोमः पवित्रमत्त्येतिरेमन् ॥१॥

वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो भगवते० ।

ॐ अधस्ताद्दिशि वासुकीदेवता कूर्मारूढो नीलवर्णो पद्महस्तो वासुकी बध्नातु वासुकीमण्डलं वासुकी सह परिवारो देवता-प्रत्यधिदेवतासहितं वासुकीमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय । ॐ ह्राँ ह्रीं हूँ श्रीं क्लीं ब्लूँ फ्रौं आँ ह्रीं क्रों हूँ फट् स्वाहा ।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ॥१॥

वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो भगवते० ।

ॐ अवान्तरस्यां दिशि विष्णुर्देवता गरुडारूढः श्यामवर्णः चक्रहस्तो विष्णुर्बध्नातु विष्णुमण्डलं विष्णुः सह परिवारो देवता-प्रत्यधिदेवतासहितं विष्णुमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय । ॐ ह्राँ ह्रीं हूँ श्रीं क्लीं ब्लूँ फ्रौं आँ ह्रीं क्रौं हूँ फट् स्वाहा ।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पार्ठ. सुरे स्वाहा ॥१॥

वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो० ।

ॐ प्राच्यां दिशि इन्द्रो सह परिवारो देवता-प्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु त्रिशूलको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादश-कोटि-भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-शाकिनी-डाकिनी-काकिनी-हाकिनी-राकिनी-याकिनी-लाकिनी-वैताल-कामिनी-ग्रहान् बन्धयामि मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय । ॐ हाँ ह्रीं हूँ श्रीं क्लीं फ्रों आँ ह्रीं क्रों हूँ फट् स्वाहा । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो भगवते० ।

ॐ आग्नेय्यां दिशि अग्निः सह परिवारो देवता-प्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु मारीचको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटि-भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-शाकिनी-डाकिनी-काकिनी-हाकिनी-याकिनी-राकिनी-लाकिनी-वैताल-कामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय । ॐ हाँ ह्रीं हूँ श्रीं क्लीं ब्लूँ फ्रों आँ ह्रीं क्रों हूँ फट् स्वाहा । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो भगवते० ।

ॐ याम्यां दिशि यमः सह परिवारो देवता प्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु एकपिङ्गलको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटि-भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-शाकिनी-डाकिनी-काकिनी-हाकिनी-याकिनी-राकिनी-लाकिनी-वैताल-कामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय । ॐ हाँ ह्रीं हूँ श्रीं क्लीं ब्लूँ फ्रों आँ ह्रीं क्रों हूँ फट् स्वाहा । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो भगवते० ।

ॐ नैर्ऋत्यां दिशि निर्ऋतिः सह परिवारो देवता प्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु सत्यको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादश-कोटि-भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-

शाकिनी-डाकिनी-काकिनी-हाकिनी-याकिनी-राकिनी-लाकिनी-वैताल-कामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय । ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ श्रीं क्लीं ब्लूँ फ्रौं आँ ह्रीं क्रौं हूँ फट् स्वाहा । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो भगवते० ।

वारुण्यां दिशि वरुणः सह परिवारो देवता प्रत्यधि-देवतास्तद्दिक्षु यशबलको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटि-भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-शाकिनी-डाकिनी-काकिनी-हाकिनी-याकिनी-राकिनी-लाकिनी-वैताल-कामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय । ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ श्रीं क्लीं ब्लूँ फ्रौं आँ ह्रीं क्रौं हूँ फट् स्वाहा । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो भगवते० ।

ॐ वायव्यां दिशि वायुः सह परिवारो देवता प्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु प्रलम्बको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटि-भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-शाकिनी-डाकिनी-काकिनी-हाकिनी-याकिनी-राकिनी-लाकिनी-वैताल-कामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय । ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ श्रीं क्लीं ब्लूँ फ्रौं आँ ह्रीं क्रौं हूँ फट् स्वाहा । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो भगवते० ।

कौबेर्य्यां दिशि कुबेरः सह परिवारो देवता प्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु अप्रश्चालको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटि-भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-शाकिनी-डाकिनी-काकिनी-हाकिनी-याकिनी-राकिनी-लाकिनी-वैताल-कामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सह परिवारकस्य

सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय । ॐ हाँ हीँ हूँ श्रीँ क्लीँ ब्लूँ फ्रौँ आँ हीँ क्रौँ हूँ फट् स्वाहा । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो भगवते० ।

ऐशान्यां दिशि ईशानः सह परिवारो देवता प्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु उन्मत्तको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटि-भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-शाकिनी-डाकिनी-काकिनी-हाकिनी-याकिनी-राकिनी-लाकिनी-वैताल-कामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय । ॐ हाँ हीँ हूँ श्रीँ क्लीँ ब्लूँ फ्रौँ आँ हीँ क्रौँ हूँ फट् स्वाहा । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो भगवते० ।

ऊर्ध्वायां दिशि ब्रह्मा सह परिवारो देवता प्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु आकाशवासी नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटि-भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-शाकिनी-डाकिनी-काकिनी-हाकिनी-याकिनी-राकिनी-लाकिनी-वैताल-कामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय । ॐ हाँ हीँ हूँ श्रीँ क्लीँ ब्लूँ फ्रौँ आँ हीँ क्रौँ हूँ फट् स्वाहा । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० ॥१॥ ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो भगवते० ।

अधस्ताद्दिशि वासुकी सहपरिवारो देवता प्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु पातालवासिनी नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटि-भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-शाकिनी-डाकिनी-काकिनी-हाकिनी-याकिनी-राकिनी-लाकिनी-वैताल-कामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय । ॐ हाँ हीँ हूँ श्रीँ क्लीँ ब्लूँ फ्रौँ आँ हीँ क्रौँ हूँ

फट् स्वाहा । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो भगवते० ।

अवान्तरस्यां दिशि विष्णुः सह परिवारो देवता प्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु महाभीमको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटि-भूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनी-डाकिनी-काकिनी-हाकिनी-याकिनी-राकिनी-लाकिनी-वैताल-कामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि मम सर्वोपद्रवनाशनाय । ॐ हाँ हीँ हूँ श्रीँ क्लीँ ब्लूँ फ्रोँ आँ हीँ क्रोँ हूँ फट् स्वाहा । वर्षन्तु ते० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो भगवते० ।

प्राच्यां दिशि ॐ नमो भगवति इन्द्राणि वज्रहस्ताभ्यां मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा० । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो० ।

आग्नेय्यां दिशि ॐ नमो भगवति अग्निज्वाले शक्तिहस्ताभ्यां मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा० । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो० ।

याम्यां दिशि ॐ नमो भगवति यमि कालदण्डहस्ताभ्यां मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा० । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो० ।

नैर्ऋत्यां दिशि ॐ नमो भगवति निर्ऋति खड्गकं कालहस्ताभ्यां मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा० । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो० ।

वारुण्यां दिशि ॐ नमो भगवति वारुणि पाशहस्ताभ्यां मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा० । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो० ।

वायव्यां दिशि ॐ नमो भगवति ध्वजहस्ताभ्यां मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा० । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो० ।

कौबेर्य्यां दिशि ॐ नमो भगवति कौबेरि गदाखड्गहस्ताभ्यां मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा० । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो० ।

ऐशान्यां दिशि ॐ नमो भगवति ईशानि त्रिशूलहस्ताभ्यां मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा० । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो० ।

ऊर्ध्वायां दिशि ॐ नमो भगवति ब्रह्माणि स्रुक्-स्रुव-कमण्डलु-अक्षसूत्रां कुशहस्तैर्मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा० । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो० ।

अवान्तरस्यां दिशि ॐ नमो भगवति श्री महालक्ष्मी पद्मारूढा पद्महस्ताभ्यां मम सह परिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा० । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो जहि० । ॐ नमो भगवते० । ॐ नमो० ।

शिरो रक्षतु ब्रह्माणी मुखं माहेश्वरी तथा ।
कण्ठे रक्षतु वाराही ऐन्द्री मम भुजद्वयम् ॥१॥
चामुण्डा हृदयं रक्षेत् कुक्षिं रक्षेच्च वारुणी ।
वैष्णवी पादमाश्रित्य पृष्ठदेशे धनुर्धरी ॥२॥
यथाऽग्रे मे तथाऽरण्ये रक्षस्व मां पदे पदे ।

ॐ ह्राँ ह्रीँ हूँ श्रीँ हँ स्त्रीँ स्फुर स्फुर सः स्त्रीँ ह्रीँ वट वट सकल ह्रीँ प्रचर प्रचर हूँ ह्रीँ कह कह श्रीँ श्रीँ क्रौँ हूँ अव अव स्त्रीँ हूँ मम रिपून् घातय घातय क्रीँ श्रीँ हूँ फट् स्त्रीं सः स ह क्ष म ल व र यूँ रक्षौँ ॐ ह्रीँ क्षम ल व र यूँ सह स्फ्रेँ स्त्रीँ सः हँ हँ सः

सोऽहं हूँ फट् स्वाहा ।

सर्वाङ्गे श्वेततारा च पातु नीलसरस्वती ।
पातु मे सर्वदा नित्यं सर्वमन्त्रप्रबोधिनी ॥
भैरवी सुन्दरी काली मातङ्गी छिन्नमस्तिका ।

यहाँ से स्तम्भन, मोहन, वशीकरण, उच्चाटनादि के प्रयोग की विधि का विधान है।

ॐ काली महाकाली हंसकाली पुलकितभद्रकालिका भवानी त्रिपुररूपा राजाकर्षिणी मम वशङ्करी स्वाहा । ॐ नमो भगवति इन्द्राणि वज्रहस्तेन सर्वतो मां रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं कान्हेश्वरी सर्वजनसर्वमुखस्तम्भिनी सर्वराजसभावशङ्करी सर्वदुष्टविदलनी सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षिणी वन्दीशृंखलां त्रोटय त्रोटय सर्वशत्रून् भञ्जय भञ्जय द्वेषिणो निर्दलनं कुरु कुरु सर्वान् स्तम्भय स्तम्भय मोहनास्त्रेण द्वेषिणामुच्चाटयोच्चाटय सर्ववशं कुरु कुरु स्वाहा । देहि देहि कालरात्रि कामिन्यै गणेश्वर्यै नमः ।

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

ॐ ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराहि इन्द्राणि चामुण्डे सिद्धचामुण्डेश्वरि गणेश्वरि क्षेत्रपालकि नारसिंहि महालक्ष्मि सर्वतो दुर्गे हुँ फट् स्वाहा । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा । ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं हुं फट् कनकवज्रवैदूर्य-मुक्तालंकृतभूषणे एहि एहि आगच्छ आगच्छ मम कर्णे प्रविश्य भूत-भविष्य-वर्त्तमानकालज्ञान-दूरदृष्टि-दूरश्रवणं ब्रूहि ब्रूहि अग्निस्तम्भनं शत्रुस्तम्भनं शत्रुमुखस्तम्भनं शत्रुगतिस्तम्भनं शत्रुमतिस्तम्भनं परेषां गतिं मतिं च सर्वशत्रूणां वागूजृम्भणं स्तम्भनं कुरु कुरु शत्रुकार्यहानिकरी मम कार्यसिद्धिकरी शत्रूणामुद्योगविध्वंसकरी वीरचामुण्डिनी हाटकधारिणी नगरी-पुरी-पट्टण-अस्थान-आस्थित-सम्मोहिनी असाध्यसाधिनी । ॐ ह्रीं श्रीं देवि हन हूँ फट् स्वाहा । ॐ ह्रीं सौं ऐं क्लीं हूँ सौं ह्रीं श्रीं क्रौं एहि एहि

भ्रमरां वाहि सकलजगन्मोहनायै मोहनाय सकल-अण्डज-पिण्डजान् भ्रामय राजाप्रजावशंकरी सम्मोहय सम्मोहय महामाये अष्टादशपीठरूपिणी अमल वर यूँ स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर कोटिसूर्यप्रभा-भासुरी चन्द्रजटी मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् भस्मी कुरु कुरु विश्वमोहिनि हुँ क्लीं हुँ हुँ फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवते कामदेवाय द्रां द्रां द्रां द्रावणबाणाय द्रीं द्रीं संदीपनबाणाय क्लीँ क्लीँ सम्मोहनबाणाय ब्लूँ ब्लूँ सन्तापनबाणाय सः सः वशीकरणबाणाय ह्रीँ ह्रीँ मदनावेशबाणाय सकलजनचिन्तितं द्रावय द्रावय कम्पित कम्पित हूँ फट् स्वाहा । ॐ क्लीँ नमो भगवते कामदेवाय श्रीँ सर्वजनप्रियाय क्लीँ सर्वजनसम्मोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हन हन वद वद तप तप सम्मोहय सम्मोहय सर्वजनं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा । ॐ ह्रीँ श्रीँ क्ष्म्रीँ क्ष्म्यैं हस्त्रौँ सहस्राराय हूँ फट् स्वाहा । ॐ नमो विष्णवे । ॐ नमो नारायणाय । ॐ जय जय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा । ॐ सहस्रारज्वालावर्त्मं क्ष्म्रौँ हन हन हुँ फट् स्वाहा ।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् । श्रीनारायणचरणौ शरणमहं प्रपद्ये श्रीमते । नारायणाय नमः ।

उग्रं वीरं महविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतो मुखम् ।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ॥
भगवन् सर्वविजय सहस्रारायराजित ।
शरणं त्वां प्रपन्नोऽस्मि श्रीकरं श्रीसुदर्शनम् ॥
आरुणी वारुणी चैव सर्वग्रहनिवारिणी ।
सर्वकर्मकरी देवी दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥

ॐ भूः स्वाहा । ॐ भुवः स्वाहा । ॐ स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यक् ग्राहयित्वा ततो महाविद्या सिद्ध्यति । अशिक्षितं नोपयुञ्जीत । अहं न जाने न च पार्वतीशः ।

एकविंशतिवाराणि परिजाप्य शुचिर्भवेत् ।
पत्रं पुष्पं फलं दद्यात् स्त्रियो वा पुरुषोऽथवा ॥
अवश्यं वशमित्याहुरात्मना च परमात्मना ।
महाविद्यावतां पुंसां मनःक्षोभं करोति यः ॥
सप्तरात्रौ व्यतीतायां शत्रुप्राणो विनश्यति ।
ॐ कुबेरं ते मुखं रौद्रं नन्दिमानन्दिमावह ॥
ज्वरमृत्युभयं घोरं विषं नाशय मे ज्वर ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृताभिवर्षाय मम ज्वररोगं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ कालकाल महाकाल कालदण्ड नमोऽस्तु ते ।
कालदण्डनिपातेन भूम्यामन्तर्हितं ज्वरम् ॥
समुद्रस्योत्तरे तीरे द्विविदो नाम वानरः ।
चातुर्थिकं ज्वरं हन्ति लिखित्वा यस्तु पश्यति ॥
ॐ समुद्रस्योत्तरे तीरे कुमुदो नाम वानरः ।
तस्य स्मरणमात्रेण ज्वरं याति रसातलम् ॥
ॐ समुद्रस्योत्तरे तीरे मारीचो नाम राक्षसः ।
तस्य मूत्रपुरीषाभ्यां हुताशनं शमय शमय स्वाहा ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय पूर्वे कपिमुखेन सकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय क्ष्रौँ दक्षिणमुखेन वीरनृसिंहाय सकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय क्ष्रीँ पश्चिममुखेन वीरगरुडाय सकलविषहरणाय स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय ग्लौँ उत्तरमुखेन वाराहाय सकलसंपत्कराय स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय ग्लौँ ऊर्ध्वमुखेन हयग्रीवाय सकलजनवशीकरणाय स्वाहा । ॐ नमो भगवते रुद्राय आञ्जनेयाय महाप्रबलाय स्वाहा ।

ॐ वायुसुताय विद्महे आञ्जनेयाय धीमहि । तन्नो हनुमत् प्रचोदयात् ।

ॐ हिमवत्युत्तरे पार्श्वे चपला नाम यक्षिणी ।
तस्याः नूपुरशब्देन विशल्या भव गर्भिणी ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥

ॐ भास्कराय विद्महे महाद्युतिकराय धीमहि । तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।

प्रतिकूलकारिणी नश्येत् । अनुकूलकारिणी अस्तु । ॐ महादेवी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि । तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥१॥

पञ्चम्यां च नवम्यां च दशम्यां च विशेषतः ।
पठित्वा तु महाविद्यां श्रीकामः सर्वदा पठेत् ॥
ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
श्रीर्मे भजतु । अलक्ष्मीर्मे नश्यतु ॥२॥
यदन्तिके यच्च दूरके भयं विन्दन्ति मामिह ।

पवमान वितज्जहि यदुत्थितं दुःखं भगवति तत् सर्वं शमय शमग स्वाहा । ॐ गायत्र्यै स्वाहा । ॐ सावित्र्यै स्वाहा । ॐ सरस्वत्यै स्वाहा । ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सहस्राक्षाय धीमहि । तन्नो इन्द्रः प्रचोदयात् ॥३॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥४॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि । तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात् ॥५॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपक्षाय धीमहि । तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥६॥ ॐ वेदात्माय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि । तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ॥७॥ ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥८॥ ॐ मन्मथेशाय विद्महे कामदेवाय धीमहि तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात् ॥९॥ ॐ वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि । तन्नो

नारसिंहः प्रचोदयात् ॥१०॥ ॐ भास्कराय विद्महे दीप्तिकराय धीमहि । तन्न आदित्यः प्रचोदयात् ॥११॥ ॐ वैश्वानराय विद्महे ज्वालालीलाय धीमहि । तन्नोऽग्निः प्रचोदयात् ॥१२॥ ॐ क्रौं महाकालाय विद्महे महारुद्राय धीमहि । तन्नो महाकालः प्रचोदयात् ॥१३॥ ॐ दक्षिणकालिकायै विद्महे ह्रीं श्मशानवासिन्यै धीमहि तन्नो घोरा प्रचोदयात् ॥१४॥ ॐ कात्यायिन्यै विद्महे कन्याकुमारी धीमहि तन्नो दुर्गा प्रचोदयात् ॥१५॥ ॐ आनन्देश्वरायै विद्महे सुधादेव्यै च धीमहि तन्नोऽर्धनारी प्रचोदयात् ॥१६॥ ॐ हंसो हंसाय विद्महे सोऽहं हंसाङ्च्यै धीमहि तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥१७॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिंहवाहिनी च विद्महे पञ्चवक्त्रायै धीमहि तन्नो महाविद्या प्रचोदयात् ॥१८॥

ॐ सहस्रपरमा देवी शतमूला शताङ्कुरा ।
सर्वं हरतु मे पापं दूर्वा दुःस्वप्ननाशिनी ॥१९॥
ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥२०॥
या शतेन प्रतनोषि सहस्रेण विरोदसि ।
तस्यास्ते देवीष्टके विधेम हविषा वयम् ॥२१॥
अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे ।
शिरसा धारयिष्यामि रक्षस्व मां पदे पदे ॥२२॥
अत्रिणा त्वाक्रमे हन्मि कण्वेन जमदग्निना ।

विश्वावसोर्ब्रह्मणा हतः क्रमेण राजा अप्येषार्ठ. स्थपतिर्वाहत ।अथो माता अथो पिता अथो स्थूला अथो क्षुद्रा अथो कृष्णा अथो श्वेता अथो अशान्तिका हताश्वेताभिः सह सर्वे हतः । अहरावद्यस्तु तस्य हविषो यथा तत् सत्यं यदुमं यमस्य जृम्भोभयोः आदधामि तथा हि तत् खँ फँ ऋषि ब्रह्मणा त्वाशयामि। ब्रह्मणस्त्वां शपथेन शयामि घोरेण त्वां भ्रूणा चक्षुषा प्रेक्षे रौद्रेण त्वां शिरसा मनसा ध्यायामि अद्य शत्त्वाधादया विद्ययामि अद्य रोभुत् पद्यस्वातासौ उतुदस्मि जावरी तल्पेजे तल्प उतुदगिरीः रणुप्रवेशाया मरीचि रूपं सं नुदयावदितः पुरस्तात् उदयाति सूर्यः तावदितोऽमुं नाशय

योऽस्मान् द्वेष्टि य च वयं द्विष्मः फट् फट् जहि छिन्धि भिन्धि हन्धि कटु इति वाचः क्रूराणिं परिवाहिणी नमस्ते अस्तु मा मा हिर्ठ.सीः द्विषन्तं मेऽभिनाशयत मृत्यो मृत्यवेन मे इष्टं रक्ष अरिष्टं भञ्ज भञ्ज स्वाहा। ॐ क्रीं कृष्णावाससे नारसिंहवदने महाभैरवि ज्वल ज्वल विद्युज्ज्वल ज्वालजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे क्ष्म्रीं क्ष्म्रौं हूँ फट् स्वाहा। ॐ नमो नारायणाय घृणिः सूर्यादित्याय सहस्राक्षाय हूँ फट् स्वाहा। वर्षन्तु ते०। अवब्रह्म०। सर्पोलूक-काक-कङ्क-कपोतादि-वृश्चिकाग्रेर्दंष्ट्राकराग्रविषान् मे महाभूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-सकलकिल्विषादि-महारोगविषान् नीरोगविषं कुरु कुरु स्वाहा।

अक्षिस्पन्दं च दुःस्वप्नं भुजस्पन्दं च दुर्मतिम्।
दुश्चित्तं दुर्गतिं रोगं भयं नाशय शाङ्करी॥
महाविद्यां कृतवतो योऽस्मान् द्वेष्टि योऽरिष्टं स्मरति।
यावदेकविंशतिं कृत्वा तावदधिकं नाशय॥
ब्रह्मविद्यामिमां देवि नित्यं सेवेत्तु यः सुधीः।
ऐहिकाऽऽमुष्मिकं सौख्यं सिद्ध्यन्त्येव न संशयः॥
अनवद्यां महाविद्यां यो दूषयति मानवः।
सोऽवश्यं मृत्युमाप्नोति षण्मासादचिरेण वै॥
अग्रतः पृष्ठतः पार्श्वादूर्ध्वतो रक्ष मे सदा।
चन्द्रघण्टा विरूपाक्षि त्वां भजे जगदीश्वरि॥
एवं विद्यां महाविद्यां त्रिः स्तौति च यो नरः।
दृष्ट्वा दुष्टजनाः सर्वे तस्य मोहवशं गताः॥
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः॥
मातर्मे मधुकैटभोग्रमहिषप्राणापहारोऽद्य मे।
हेलानिर्मित-धूम्रलोचनवधे हे चण्डमुण्डार्दिनि॥
निःशेषीकृत-रक्तबीजतनुजे नित्ये निशुम्भापहे।

शुम्भध्वंसिनि राशि सर्वदुरिते दुर्गे नमस्तेऽम्बिके ॥१॥
कालदण्डकरालवदनां रक्तलोचनयुगलभीषणाम् ।
कालदण्डपरं मृत्युं विजयां बन्धयाम्यहम् ॥
पञ्चयोजनविस्तीर्णं मृत्योश्च मुखमण्डलम् ।

तस्माद्रक्ष महाविद्ये भद्रकालि नमोऽस्तु ते । वर्षन्तु ते०। अवब्रह्मद्वि०। वारिजलोचन सहाये वारयुगतिं वारयाशु करनिकरैः पूरित-मेघगगनादयिता गोपकन्यके सहोदरेऽवतु । वर्षन्तु ते० । अवब्रह्मद्विषो० । ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं सिद्धलक्ष्मी स्वाहा । ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ।

ॐ आवहन्ति वितन्वाना कुर्वाणा चिरमात्मनः।
वासांसि मम गावश्च अन्नपाने च सर्वदा॥
ततो मे श्रियमावह लोमशां पशुभिः सह स्वाहा।

श्रिये यात श्रियं अनिरियाय श्रियं योजयरतृभ्यो दधाति श्रियं वसानां अमृतत्वमायान् भवन्ति सत्या समेया मितथद्रौ।

श्रिययेवैनं तच्छ्रियामादधाति सं तत् स्मृत्वा वषट् करोति सं तस्यै संधीयते प्रजयामशुभिर्य एवं वेद।

ॐ हाँ ह्रीं हूँ श्रीं क्लीं ब्लूँ फ्रों आँ ह्रीं क्रों हूँ फट् स्वाहा। वर्षन्तु ते०। अवब्रह्मद्विषो जहि०।

ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। हरिः ॐ। ॐ ॐ। श्रीदक्षिणामूर्त्तये नमः।

इति श्रीमदथर्वणरहस्ये श्रीमद्वनदुर्गोपनिषत् सम्पूर्णम् ।

●

[अथ हवनार्थद्रव्यम्]

प्रथमा। द्वितीया। चरु। घृत। जायफल। जयपवी। लवंग। दालचीनी। पञ्चपल्लव। शमी। पलाश। अर्क। खादिर। आम। (वा) प्लक्ष। (वा) मधूक।

●

श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

ईश्वर उवाच

शतनाम प्रवक्ष्यमि शृणुष्व कमलानने।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती ॥१॥
ॐ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥२॥
पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः।
मनोबुद्धिरहङ्कारा चित्तरूपा चिता चितिः ॥३॥
सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी ।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याऽभव्या सदागतिः ॥४॥

शंकर जी कहते हैंह्न हे कमलानने ! अब मैं अष्टोत्तर शतनाम का वर्णन करता हूँ, सुनो, जिसके प्रसाद (पाठ या श्रवण) मात्र से परम साध्वी भगवती दुर्गा प्रसन्न हो जाती हैं ॥ १ ॥

१ ॐ सती, २ साध्वी, ३ भवप्रीता (भगवान् शिव पर प्रीति रखने वाली), ४ भवानी, ५ भवमोचनी (संसारबन्धन से मुक्त करने वाली), ६ आर्या, ७ दुर्गा, ८ जया, ९ आद्या, १० त्रिनेत्रा, ११ शूलधारिणी ॥ २ ॥

१२ पिनाकधारिणी, १३ चित्रा, १४ चन्द्रघण्टा (प्रचण्ड स्वर से घण्टा नाद करने वाली), १५ महातपा (भारी तपस्या करने वाली), १६ मन (मननशक्ति), १७ बुद्धि (बोध शक्ति), १८ अहंकारा, (अहतां का आश्रय), १९ चित्तरूपा, २० चिता, २१ चिति (चेतना), ॥ ३ ॥

२२ सर्वमन्त्रमयी, २३ सत्ता (सत्-स्वरूपा), २४ सत्यानन्दस्वरूपिणी, २५ अनन्ता (जिसके स्वरूप का कहीं अन्त नहीं), २६ भाविनी (सबको उत्पन्न करने वाली), २७ भाव्या (भावना एवं ध्यान करने योग्य), २८ भव्या (कल्याणरूपा), २९ अभव्या (जिससे बढ़कर भव्य कहीं है नहीं), ३० सदागति, ॥ ४ ॥

शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा ।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥५॥
अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती ।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी ॥६॥
अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी ।
नवदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता ॥७॥
ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा ।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः॥८॥
विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा ।
बहुला बहुलप्रेमा सर्वाहनवाहना ॥९॥

३१ शाम्भवी (शिवाप्रिया), ३२ देवमाता, ३३ चिन्ता, ३४ रत्नप्रिया, ३५ सर्वविद्या, ३६ दक्षकन्या, ३७ दक्षयज्ञविनाशिनी, ॥ ५ ॥

३८ अपर्णा (तपस्या के समय पत्ते को भी न खाने वाली), ३९ अनेकवर्णा (अनेक रंगों वाली), ४० पाटला (लाल रंग वाली), ४१ पाटलावती (गुलाब के फूल या लाल फूल धारण करने वाली), ४२ पट्टाम्बरपरीधाना (रेशमी वस्त्र पहनने वाली), ४३ कलमञ्जीर-रञ्जिनी (मधुर ध्वनि करने वाले मञ्जीर को धारण करके प्रसन्न रहने वाली), ॥ ६ ॥

४४ अमेयविक्रमा (असीम पराक्रम वाली), ४५ क्रूरा (दैत्यों के प्रति कठोर), ४६ सुन्दरी, ४७ सुरसुन्दरी, ४८ वनदुर्गा, ४९ मातङ्गी, ५० मतङ्गमुनिपूजिता, ॥ ७ ॥

५१ ब्राह्मी, ५२ माहेश्वरी, ५३ ऐन्द्री, ५४ कौमारी, ५५ वैष्णवी, ५६ चामुण्डा, ५७ वाराही, ५८ लक्ष्मी, ५९ पुरुषाकृति, ॥ ८ ॥

६० विमला, ६१ उत्कर्षिणी, ६२ ज्ञाना, ६३ क्रिया, ६४ नित्या, ६५ बुद्धिदा, ६६ बहुला, ६७ बहुलप्रेमा, ६८ सर्ववाहनवाहना, ॥ ९ ॥

निशुम्भ-शुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी ।
मधु-कैटभहन्त्री च चण्ड-मुण्ड-विनाशिनी ॥१०॥
सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी ।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा ॥११॥
अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी ।
कुमारी चैकन्या च कैशोरी युवती यतिः॥१२॥
अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा ।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥१३॥
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी ।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी ॥१४॥

---

६९ निशुम्भ-शुम्भहननी, ७० महिपासुरमर्दिनी, ७१ मधु-कटैभ-हन्त्री, ७२ चण्डमुण्डविनाशिनी, ॥ १०॥

७३ सर्वासुरविनाशा, ७४ सर्वदानवघातिनी, ७५ सर्वशास्त्रमयी, ७६ सत्या, ७७ सर्वास्त्रधारिणी, ॥ ११॥

७८ अनेकशस्त्रहस्ता, ७९ अनेकास्त्रधारिणी, ८० कुमारी, ८१ एककन्या, ८२ कैशोरी, ८३ युवती, ८४ यति, ॥ १२॥

८५ अप्रौढा, ८६ प्रौढा, ८७ वृद्धमाता, ८८ बलप्रदा, ८९ महोदरी, ९० मुक्तकेशी, ९१ घोररूपा, ९२ महाबला, ॥ १३॥

९३ अग्निज्वाला, ९४ रौद्रमुखी, ९५ कालरात्रि, ९६ तपस्विनी, ९७ नारायणी, ९८ भद्रकाली, ९९ विष्णुमाया, १०० जलोदरी, ॥ १४॥

शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी ।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी ॥१५॥
य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम् ।
नाऽसाध्यं विद्यते देवि! त्रिषु लोकेषु पार्वती ॥१६॥
धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च ।
चतुर्वर्गं तथा चाऽन्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम् ॥१७॥
कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम् ।
पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम् ॥१८॥
तस्या सिद्धिर्भवेद् देवि! सर्वैः सुरवरैरपि ।
राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात् ॥१९॥

१०१ शिवदूती, १०२ कराली, १०३ अनन्ता (विनाशरहिता), १०४ परमेश्वरी, १०५ कात्यायनी, १०६ सावित्री, १०७ प्रत्यक्षा, १०८ ब्रह्मवादिनी ॥ १५ ॥

हे देवि पार्वती ! जो प्रतिदिन दुर्गा जी के इन अष्टोत्तर शतनाम का पाठ करता है, उसके लिये तीनों लोकों में कुछ भी असाध्य नहीं है ॥ १६ ॥

वह धन, धान्य, पुत्र, स्त्री, घोड़ा, हाथी, धर्म आदि चारों पुरुषार्थ तथा अन्त में सनातन मुक्ति भी प्राप्त कर लेता है ॥ १७ ॥

इति श्रीविश्वसारतन्त्रे दुर्गाऽष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

कुमारी का पूजन और देवी सुरेश्वरी का ध्यान करके परम भक्ति के साथ उनका पूजन करे फिर, अष्टोत्तर शतनाम का पाठ आरम्भ करे ॥ १८ ॥

हे देवि ! जो ऐसा करता है, उसे सर्वश्रेष्ठ देवताओं से भी सिद्धि प्राप्त होती है। राजा उसके दास हो जाते हैं, वह राज्य–लक्ष्मी को प्राप्त कर लेता है ॥ १९ ॥

गोरोचना-ऽलक्तक-कुङ्कुमेन
सिन्दूर-कर्पूर-मधुत्रयेण ।
विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो
भवेत् सदा धारयते पुरारिः ॥२०॥
भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते ।
विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् सम्पदां पदम् ॥२१॥

गोरोचन , लाक्षा , कुंकुम , सिन्दूर , कपूर , घी (अथवा दूध , चीनी और मधु) इन वस्तुओं को एकत्र करके इनसे विधिपूर्वक यन्त्र लिखकर , जो विधिज्ञ पुरुष सदा इस महा मृत्युञ्जय यन्त्र को धारण करता है , वह शिव के तुल्य (मोक्षरूप) हो जाता है॥ २०॥

भौमवती अमावास्या की आधी रात में , जब चन्द्र शतभिषा नक्षत्र पर हों , उस समय इस स्तोत्र को लिखकर , जो इसका पाठ करता है , वह सम्पत्तिशाली होता है। ॥२१॥

श्रीदुर्गापदुद्धारस्तोत्रम्

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे
नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे ।
नमस्ते जगद्वन्द्य-पादारविन्दे
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥१॥
नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे
नमस्ते महायोगि विज्ञानरूपे ।
नमस्ते सदानन्दनन्दस्वरूपे
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥२॥
अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य
भयार्त्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः ।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥३॥

अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये
नले सागरे प्रान्तरे राजगेहे ।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतु-
र्नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥४॥
अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे
विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम् ।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥५॥
नमश्चण्डिके चण्ड-दोर्दण्डलीला-
समुत्खण्डिता-खण्डलाशेषशत्रोः ।
त्वमेका गतिर्विघ्नसन्देहहन्त्री
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥६॥
त्वमेका सदाऽऽराधिता सत्यवादि-
न्यनेकाऽखिला क्रोधना क्रोधनिष्ठा।
इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्णा च नाडी
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥७॥
नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे
सरस्वत्यरुन्धत्यमोघस्वरूपे ।
विभूतिः सतां कालरात्रिस्वरूपे
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥८॥
शरणमसि सुराणां सिद्धविद्याधराणां
मुनिदनुजवराणां व्याधिभिः पीडितानाम् ।
नृपतिगृहगतानां दस्युभिस्त्रासितानां
त्वमसि शरणमेका देवि दुर्गे प्रसीद ॥९॥
इदं स्तोत्रं मया प्रोक्तमापदुद्धारहेतुकम्।
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा पठनादेव सङ्कटात्।
मुच्यते नाऽत्र सन्देहो भुवि स्वर्गे रसातले ॥१०॥
समस्तश्लोकमेकं वा यः पठेत् भक्तिमान् सदा।
स सर्वं दुष्कृतं व्यक्त्वा (तीर्त्वा) प्राप्नोति
परमां गतिम् ॥११॥

पठनादस्य देवेशि किन्न सिध्यति भूतले।
स्तवराजमिदं देवि संक्षेपात् कथितं त्वयि ॥१२॥

इति विश्वसारे आपदुद्धारकल्पे दुर्गास्तवराजं समाप्तम्।

रुद्रचण्डीकवचम्

विनियोगः- श्रीरुद्रचण्डीकवचस्य भैरवऋषिरनुष्टुप्छन्दः, चण्डिकादेवता, चतुर्वर्गफलप्राप्त्यर्थं पाठे विनियोगः।

श्रीकार्तिकेय उवाच-

कवचं चण्डिकादेव्या श्रोतुमिच्छामि ते शिव।
यदि तेऽस्ति कृपानाथ! कथयस्व जगत् प्रभो ॥१॥

श्रीशिव उवाच-

शृणु वत्स! प्रवक्ष्यामि चण्डिकाकवचं शुभम्।
मुक्ति-भुक्तिप्रदातारमायुष्यं सर्वकामदम् ॥२॥
दुर्लभं सर्वदेवानां सर्वपापनिवारणम्।
मन्त्रसिद्धिकरं पुंसां ज्ञानसिद्धिकरं परम् ॥३॥
चण्डिकाकवचस्याऽस्य ऋषिर्देवोऽथ भैरवः।
चण्डिकादेवता प्रोक्ता छन्दोऽनुष्टुप् प्रकीर्तितम् ॥४॥
चतुर्वर्गफलप्राप्त्यै विनियोगः प्रकीर्तितः।
चण्डिका मेऽग्रतः पातु आग्नेय्यां भव सुन्दरी ॥५॥
याम्यां पातु महादेवी नैर्ऋत्यां पातु पार्वती।
वारुणे चण्डिका पातु चामुण्डा पातु वायवे ॥६॥
उत्तरे भैरवी पातु ईशाने पातु शङ्करी।
पूर्वे पातु शिवादेवी ऊर्ध्वं पातु महेश्वरी ॥७॥
अधः पातु सदानन्ता मूलाधारविनाशिनी।
मूर्ध्नि पातु महादेवी ललाटे च महेश्वरी ॥८॥
कण्ठे कोटीश्वरी पातु हृदये नलकूबरी।
नाभौ कटिप्रदेशे च पायाल्लम्बोदरी सदा ॥९॥
ऊर्वोर्जान्वोः सदा पायात् त्वचं मे मदलालसा।
शुक्र-मज्जा-ऽस्थि-सङ्घेषु गुह्यं मे भुवनेश्वरी ॥१०॥

ऊर्ध्वकेशी सदा पायान्नाभौ सर्वाङ्गसन्धिषु ।
'ॐ ऐं ऐं ह्रीं ह्रीं चामुण्डे स्वाहा' मन्त्रस्वरूपिणी ॥११॥
आत्मानं मे सदा पायात् सिद्धिविद्या दशाक्षरी ।
इत्येतत् कवचं देव्या चण्डिकायाः शुभावहम् ॥१२॥
गोपनीयं प्रयत्नेन कवचं सर्वसिद्धिदम् ।
सर्वरक्षाकरं धन्यं न देयं यस्य कस्यचित् ॥१३॥
अज्ञात्वा कवचं देव्या यः पठेत् स्तवमुत्तमम् ।
न नस्य जायते सिद्धिर्बहुधा पठेनन च ॥१४॥
धृत्वैतत् कवचं देव्या दिव्यदेहधरो भवेत् ।
अधिकारी भवेदेतच्चण्डीपाठेन साधकः ॥१५॥

इति रुद्रचण्डीकवचं समाप्तम् ।

श्रीचण्डिकायै नमः

रुद्रचण्डीस्तोत्रम्

उक्तं च रुद्रयामले । श्रीशङ्कर उवाचह्ल

चण्डिकां हृदये न्यस्य शरणं यः करोत्यपि ।
अनन्तफलमाप्नोति देवी चण्डीप्रसादतः ॥१॥
रविवारे यदा चण्डीं पठेदागमसम्मताम् ।
नवावृत्तिफलं तस्य जायते नाऽत्र संशयः ॥२॥
सोमवारे यदा चण्डीं पठेद्यस्तु समाहितः ।
सहस्रावृत्तिपाठस्य फलं जानीहि सुव्रते ॥३॥
कुजवारे जगद्धात्रीं पठेदागमसम्मतम् ।
शतावृत्तिफलं तस्य बुधे लक्ष फलं ध्रुवम् ॥४॥
गुरौ यदि महामाये लक्षयुग्मफलं ध्रुवम् ।
शुक्रे देवि जगद्धात्रि चण्डीपाठेन शङ्करि ॥५॥
ज्ञेयं तुल्यफलं दुर्गे यदि चण्डी समाहितः ।
शनिवारे जगद्धात्रि यस्यावृत्तिफलं ध्रुवम् ॥६॥
अत एव महेशानि यो वै चण्डीं समभ्यसेत् ।
स सद्यश्च कृतार्थश्च राजराजाधिपो भवेत् ॥७॥

आरोग्यं विजयं सौख्यं वस्त्ररत्नप्रबालकम्।
पठनाच्छ्रवणाच्चैव जायते नात्र संशयः॥८॥
धनं धान्यं प्रबालं च वस्त्रं रत्नविभूषणम्।
चण्डीश्रवणमात्रेण कुर्यात् सर्वं महेश्वरि॥९॥
घोरचण्डी महाचण्डी चण्डमुण्डविखण्डिनी।
चतुर्वक्त्रा महावीर्या महादेवविभूषिता॥१०॥
रक्तदन्ता वरारोहा महिषासुरमर्दिनी।
तारिणी जननी दुर्गा चण्डिका चण्डविक्रमा॥११॥
गुह्यकाली जगद्धात्री चण्डी च यामलोद्भवा।
श्मशानवासिनी देवी घोरचण्डी भयानका॥१२॥
शिवा घोरा रुद्रचण्डी महेशगणभूषिता।
जाह्नवी परमा कृष्णा महात्रिपुरसुन्दरी॥१३॥
श्रीविद्या परमाविद्या चण्डिका वैरिमर्दिनी।
दुर्गी दुर्गा शिवा घोरा चण्डहस्ता प्रचण्डिका॥१४॥
माहेशी बगला देवी भैरवी चण्डविक्रमा।
प्रमथैर्भूषिता कृष्णा चामुण्डा मुण्डमर्दिनी।१५॥
रणखण्डा चन्द्रघण्टा रणरामवरप्रदा।
भरणी भद्रकाली च शिवा घोरभयानका॥१६॥
विष्णुप्रिया महामाया नन्दगोपगृहोद्भवा।
मङ्गला जननी चण्डी महा क्रुद्धभयङ्करी॥१७॥
विमला भैरवी निद्रा जातिरूपा मनोहरा।
तृष्णा निद्रा क्षुधा माया शक्तिर्माया मनोहरा॥१८॥
तस्यै देव्यै नमस्तस्यै सर्वरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१९॥
इमां चण्डीं जगद्धात्रीं ब्राह्मणस्तु सदा पठेत्।
नाऽन्यांस्तु पाठयेद् देवि पठने ब्रह्महा भवेत्॥२०॥
यः शृणोति धरायां च मुच्यते सर्वपातकैः।
ब्रह्महत्या च गोहत्या स्त्रीवधोद्भवपातकम्॥२१॥
श्वश्रूगमनपापं च कन्यागमनपातकम्।
तत्सर्वं पातकं दुर्गे मातृगमनपातकम्॥२२॥

सुतस्त्रीगमने चैव यद्यत्पापं प्रवर्तितम् ।
परदारकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ॥२३॥
जन्म-जन्मान्तरात्पापाद् गुरुहत्यादिपातकम् ।
मुच्यते मुच्यते देवि गुरुपत्नीसुसङ्गमात् ॥२४॥
मनसा वचसा पापं यत्पापं ब्रह्महिंसने ।
मिथ्यायाश्चैव यत्पापं तत्पापं नश्यति क्षणात् ॥२५॥
श्रवणं पठनं चैव यः करोति धरातले ।
स धन्यश्च कृतार्थश्च राजराजाधिपो भवेत् ॥२६॥
यः करिष्यत्यविज्ञाय रुद्रयामलचण्डिकाम् ।
पापैरेतैः समायुक्तौ रौरवं नरकं व्रजेत् ॥२७॥
अश्रद्धया च कुर्वन्ति तेन पातकिनो नरः ।
रौरवं नरकं कुण्डं कृमिकुण्डमलस्य वै ॥२८॥
शुक्रस्य कुण्डं स्त्रीकुण्डं यान्ति ते ह्यचिरेण वै ।
ततः पितृगणैः सार्धं विष्ठायां जायते कृमि ॥२९॥
शृणु देवि महामाये चण्डीपाठं करोति यः ।
गङ्गायां चैव यत्पुण्यं काश्यां विश्वेश्वराग्रतः ॥३०॥
प्रयागे मुण्डने चैव हरिद्वारे हरेर्गृहे ।
तस्य पुण्यं भवेद्देवि सत्यं दुर्गे रमे शिवे ॥३१॥
त्रिगयायां त्रिकाश्यां वै यत्र पुण्यं समुपस्थितम् ।
तच्च पुण्यं तच्च पुण्यं तच्च पुण्यं न संशयः ॥३२॥
भवानी च भवानी च भवानी चोच्यते बुधैः ।
भकारस्तु भकारस्तु भकारः केवलः शिवः ॥३३॥
वाणी चैव जगद्धात्री वरारोहे भकारकः ।
प्रेतवद् देवि विश्वेशि भकारः प्रेतवत्सदा ॥३४॥
आरोग्यं च जयं पुण्यं ततः सुखविवर्धनम् ।
धनं पुत्रं जरारोग्यं कुष्ठं गलितनाशनम् ॥३५॥
अर्द्धाङ्गरोगान्मुच्येत दद्रुरोगाश्च पार्वति ।
सत्यं सत्यं जगद्धात्री महामाये शिवे शिवे ॥३६॥
चण्डे चण्डि महारावे चण्डिकाव्याधिनाशिनी ।
मन्दे दिने महेशानि विशेषफलदायिनी ॥३७॥

सर्वदुःखाद्विमुच्येत भक्त्या चण्डीं शृणोति यः ।
ब्राह्मणो हितकारी च पठेन्नियतमानसः ॥३८॥
मङ्गलं मङ्गलं ज्ञेयं मङ्गलं जयमङ्गलम् ।
भवेद्धि पुत्र-पौत्रैश्च कन्यादासादिभिर्युतः ॥३९॥
तत्त्वज्ञानेन निधनं कालनिर्वाणमाप्नुयात् ।
मणिदानोद्भवं पुण्यं तुलाहिरण्यके तथा ॥४०॥
चण्डीश्रवणमात्रेण पठनाद् ब्राह्मणोऽपि च ।
निर्वाणमेति देवेशि महास्वस्त्ययने हितः ॥४१॥
सर्वत्र विजयं याति श्रवणाद् गृहदोषतः ।
मुच्यते च जगद्धात्रि राजराजाधिपो भवेत् ॥४२॥
महाचण्डी शिवा घोरा महाभीमा भयानका ।
काञ्चनी कमला विद्या महारोगविमर्दिनी ॥४३॥
गुह्यचण्डी घोरचण्डी चण्डी त्रैलोक्यदुर्लभा ।
देवानां दुर्लभा चण्डी रुद्रयामलसम्मता ॥४४॥
अप्रकाश्या महादेवी प्रियारावणामर्दिनी ।
मत्स्यप्रिया मांसरता मत्स्यमांसबलिप्रिया ॥४५॥
मदमत्ता महानित्या भूतप्रमथसम्मता ।
महाभागा महारामा धान्यदा धनरत्नदा ॥४६॥
वस्त्रदा मणिराज्यापि सदा विषयवर्द्धिनी ।
मुक्तिदा सर्वदा चण्डी महाविषयनाशिनी ॥४७॥
इमां हि चण्डीं पठते मनुष्यः
शृणोति भक्त्या परमां शिवस्य ।
चण्डीं धरण्यां भवति पुण्ययुक्तां
स वै न गच्छेत्परमन्दिरे किल ॥४८॥
जप्यं मनोरथं दुर्गे तनोति धरणीतले ।
रुद्रचण्डीप्रसादेन किं न सिद्ध्यति भूतले ॥४९॥
रुद्रध्येया रुद्ररूपा रुद्राणी रुद्रवल्लभा ।
रुद्रशक्ती रुद्ररूपा रुद्रमुखसमन्विता ॥५०॥
शिवचण्डी महाचण्ड-शिवप्रेत-गणान्विता ।
भैरवी परमा विद्या महाविद्या च षोडशी ॥५१॥

सुन्दरी परमा पूज्या महात्रिपुरसुन्दरी।
गुह्यकाली भद्रकाली महाकालविमर्दिनी॥५२॥
कृष्णा तृष्णा स्वरूपा सा जगन्मोहनकारिणी।
अतिमन्त्रा महालज्जा सर्वमङ्गलदायिनी॥५३॥
घोरतन्त्री भीमरूपा भीमादेवी मनोहरा।
मङ्गला बगला सिद्धिदायिनी सर्वदा शिवा॥५४॥
स्मृतिरूपा कीर्तिरूपा योगार्द्रैरपि सेविता।
भयानका महादेवि भयदुःखविनाशिनी॥५५॥
चण्डिका शक्तिहस्ता च कौमारी सर्वकामदा।
वाराही च वराहास्या इन्द्राणी शक्रपूजिता॥५६॥
माहेश्वरी महेशस्य महेशगणभूषिता।
चामुण्डा नारसिंही च नृसिंहशत्रुमर्दिनी॥५७॥
सर्वशत्रुप्रशमनी सर्वारोग्यप्रदायिनी।
इति सत्यं महादेवि सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥५८॥
नैव शोकं नैव रोगं नैव दुःखं भयं तथा।
आरोग्यं मङ्गलं नित्यं करोति शुभमङ्गलम्॥५९॥
महेशानि वरारोहे ब्रवीमि सत्यमुत्तमम्।
अभक्ताय न दातव्यं मम प्राणाधिकं शुभम्॥६०॥
तव भक्ताय शान्ताय शिवविष्णुप्रियाय च।
दद्यात् कदाचिद् देवेशि सत्यं सत्यं महेश्वरी॥६१॥
अनन्तफलमाप्नोति शिवचण्डीप्रसादतः।
अश्वमेधे वाजपेय-राजराजशतानि च॥६२॥
तुष्टाश्च पितरो देवास्तथा च सर्वदेवताः।
दुर्गेयं मृण्मयीज्ञानं रुद्रयामलपुस्तकम्॥६३॥
मन्त्रमक्षरसंज्ञातं करोत्यपि नराधिपः।
अत एव महेशानि किं वक्ष्ये तव सन्निधौ॥६४॥
लम्बोदराधिकश्चण्डी पठनाच्छ्रवणात्तु यः।
तत्त्वमस्यादिवाक्येन मुक्तिं प्राप्नोति दुर्लभाम्॥६५॥

इति रुद्रचण्डीस्तोत्रं समाप्तम्।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्ञा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि! विश्वम्॥

श्रीचण्डिकामालामन्त्रः

उक्तश्चाऽथर्वागमसंहितायाम्-

ॐ अस्य श्रीचण्डिकामालामन्त्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीचण्डिका देवता, ॐ हः बीजम्, ॐ सौं शक्तिः, हौं कीलकम्। मम श्रीचण्डिकाप्रसादसिद्ध्यर्थं सकलजनवश्यार्थं श्रीचण्डिकामालामन्त्रजपे विनियोगः।

न्यासः-

ॐ ह्रां फ्रां इत्यादिषडङ्गानि विन्यस्य।

ध्यानम्-

कल्याणीं कमलासनस्थ-सुभदां गौरीं घनश्यामलाम्
विभूषितभूषितामभयदामाद्रैकरक्षैः शुभैः।
श्रीं ह्रीं क्लीं वरमन्त्रराजसहितामानन्दपूर्णात्मिकाम्
श्रीशैले भ्रमरात्मिकां शिवयुतां चिन्मात्रमूर्तिं भजे॥

इति ध्यात्वा।

अथ मालामन्त्रः

ॐ हः ॐ सौं ॐ हौं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्री जय जय चण्डिका चामुण्डे चण्डिके त्रिदश-मुकुट-कोटि-संघट्टित-चरणारविन्दे गायत्रि सावित्रि सरस्वति महिकृताभरणे भैरवरूपधारिणि प्रकटित-दंष्ट्रोग्रवदने घोराननयने ज्वलज्वालासहस्रपरिवृते महाट्टहासा-आलोकितदिगन्तरे सर्वयुगपरिपूर्णे कपालहस्ते गजाजिनोत्तरीये भूत-वेताल-परिवृत-

प्रकम्पितधराधरे मधु-कैटभ-महिषासुर-धूम्रलोचन-चण्ड-मुण्ड-रक्तबीज-शुम्भ-निशुम्भदैत्यनिकृते कालरात्रि-महामाये शिवे निंत्ये ॐ ऐं ह्रीं ऐन्द्रि आग्नेयि याम्ये नैऋति वारुणि वायव्ये कौबेरि ईशान्ये ब्रह्म-विष्णु-शिवस्थिते त्रिभुवनधराधरे वामे ज्येष्ठे रौद्रि अम्बिके ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराहीन्द्राणी ईशानी महालक्ष्मी इति स्थिते महोग्रविषमहाविषोरगफणाया-मुकुटरत्नमहा-ज्वालामलमणि महाहिहार-बाहुकहोत्तमाङ्ग-नवरत्ननिधि-कोटितत्त्वबहुजिह्वावाणी-शब्द-स्पर्श-रूपरसगन्धस्थिति-क्षितिसाहसमध्यस्थिते महोज्ज्वल-महाविषाप-विषगन्धर्व-विद्याधराधिपते ॐ ऐंकारा ॐ ह्रींकारा ॐ क्लींकारा हस्ते ॐ ह्रां ह्रीं क्रौं अनग्नेऽनग्ने पाते प्रवेशय प्रवेशय ॐ द्रां द्रीं शोषय शोषय ॐ द्रां द्रीं होमय-होमय ॐ फ्रां फ्रीं दीपय-दीपय ॐ ब्लूँ ब्लूँ सन्तापय-सन्तापय ॐ सौं सौं उन्मादय-उन्मादय ॐ म्लैं म्लैं मोहय-मोहय ॐ खां खां शोधय-शोधय ॐ द्यां द्यां उन्मादय-उन्मादय ॐ ह्रीं ह्रीं आवेशय-आवेशय ॐ स्त्रीं स्त्रीं छादय-छादय ॐ स्त्रीं स्त्रीं आकर्षय-आकर्षय ॐ हुं हुं आस्फोटय-आस्फोटय ॐ त्रूँ त्रूँ त्रोटय-त्रोटय ॐ छां छां छेदय-छेदय ॐ कूँ कूँ उच्चाटय-उच्चाटय ॐ हूँ हूँ हन-हन ॐ ह्रीं ह्रीं मारय-मारय ॐ घ्रीं घ्रीं घर्षय-घर्षय ॐ स्त्रीं स्त्रीं विध्वंसय विध्वंसय ॐ प्लूँ प्लूँ प्लावय-प्लावय ॐ भ्रां भ्रां भ्रामय-भ्रामय ॐ म्रां म्रां दर्शय-दर्शय ॐ दां दां दिशो बन्धय-बन्धय ॐ दीं दीं वर्द्धिनायैकाग्रचित्ताविशि कुरु ते हूं गये ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं हः ॐ फ्रां फ्रीं फ्रूँ फ्रैं फ्रौं फ्रः ॐ चामुण्डायै विच्चे स्वाहा। मम सर्वत्र मनोरथं देहि सर्वोपद्रवं निवारय अमुकं वशं कुरु कुरु भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मपिशाच-ब्रह्मराक्षस-यक्ष-यमदूत-शाकिनी-डाकिनी-सर्वदापदात्तत्करादिकं नाशय-नाशय मारय-मारय भञ्जय भञ्जय ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा॥१॥ जपो नित्यम्॥२॥

आदौ सुवासिन्याः कुमार्याः पूजां कृत्वा, पश्चात् जपं कुर्यात्। एवमेकविंशतिशतं जपेत्।

स्त्रियो वा पुरुषो वोऽपि ।
राजद्वारे श्मशाने च विवादे शत्रुसङ्कटे ।
शत्रोरुच्चाटने चैव सर्वकार्याणि साधयेत् ॥

इति श्रीचण्डिकामालामन्त्रनिरूणं समाप्तम्।

भगवती-स्तुतिः

प्रातः स्मरामि शरदिन्दु-करोज्ज्वलाभाम्
सद्रत्नवन्मकर-कुण्डलहार-भूषाम् ।
दिव्यायुधोर्जित-सुनील-सहस्रहस्ताम्
रक्तोत्पलाभ-चरणां भवतीं परेशाम् ॥१॥
प्रातर्नमामि महिषासुर-चण्ड-मुण्ड-
शुम्भासुर-प्रमुखदैत्य-विनाशदक्षाम् ।
ब्रह्मेन्द्र-रुद्र-मुनिमोहन-शीललीलां
चण्डीं समस्त-सुरमूर्तिमनेकरूपाम् ॥२॥
प्रातर्भजामि भजतामभिलाषदात्रीं
धात्रीं समस्त-जगतां दुरितापहन्त्रीम् ।
संसार-बन्धन-विमोचन-हेतुभूतां
मायां परां समधिगम्य परस्य विष्णोः ॥३॥
श्लोकत्रयमिदं देव्याश्चण्डिकायाः पठेन्नरः ।
सर्वान् कामानवाप्नोति विष्णुलोके महीयते ॥४॥

इति भगवती-स्तुतिः समाप्ता।



तन्त्र साधन कुपात्रों को नहीं

वैदिक एवं यौगिक साधनों का तत्त्व 'तन्त्र' है। जिसको विश्व के कल्याण हेतु भगवान् शंकर ने उपदेश दिया है। जब शक्ति को वाक्यों में केन्द्रित किया जाता है तो वह मंत्र कहा जाता है। इसी प्रकार शक्ति को अक्षर एवं अंक में केन्द्रित

किया जाता है तो वह तंत्र एवं यंत्र कहा जाता है, मंत्र का स्वरूप विकसित होता है. जब कि तंत्र बीज रूप होता है। वैदिक साधना का मार्ग लम्बा किन्तु सुरक्षित होता है, जब कि तंत्र-साधना का मार्ग छोटा एवं सीधा किन्तु अत्यन्त जटिल एवं खतरनाक होता हैह्लइसीलिये इसे कुपात्र एवं भ्रष्ट-साधकों के लिए निषिद्ध है, शक्ति और शाक्त एक ही रेखा के दो बिन्दु हैं। इन दोनों का समन्वयनह्लखुशहाली स्वर्ण युग चतुर्दिक् होता है। वस्तुतः तंत्र आस्था का तत्त्व हर भारतीय के रक्त में व्याप्त है, वेदों के समान ही तंत्र शास्त्र का भारतीय वाङ्मय में स्थान रहा है, जिस प्रकार अलग-अलग यन्त्रों में विद्युत्त्-शक्ति प्रवाहित करके हवा, प्रकाश अथवा गर्मी इत्यादि प्राप्त करना संभव है. उसी प्रकार उपकरणों में परिवर्तन करके तंत्र शक्ति द्वारा मानव जीवन में विभिन्न उपलब्धियाँ प्राप्त करने की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार कल-कारखानों में बिजली के प्रयोग से भौतिक समृद्धि संभव है, उसी प्रकार तंत्र साधना की शक्ति से भी समृद्धि, ऐश्वर्य तथा महानतम आध्यात्मिक उपलब्धियाँ प्राप्त करना संभव है। तंत्र अक्षर विज्ञान है, जिसका मानव देह से नैसर्गिक सम्बन्ध है। भारतीय मनीषियों की मान्यता है कि अक्षरों की उत्पत्ति ख्याति से हुई है। शिवने अपने नृत्य की समाप्ति पर चौदह बार डमरू बजाया, जिससे 'अ इ उण्, ऋलृक्' इत्यादि चौदह सूत्र प्रकाश में आये, जिन्हें "शिव सूत्र जाल" की संज्ञा दी गई है। यही शिवसूत्र जाल सम्पूर्ण वाङ्मय का मूलाधार है। शिव और पार्वती अथवा भैरव और भैरवी, जो शिव तथा पार्वती के ही प्रतिरूप हैं, सम्पूर्ण तंत्र-शास्त्र के संवाद स्रोत हैं। मानव शरीर के साथ तंत्र के घनिष्ठ सम्बन्ध की जानकारी, हमें षट्चक्रों के स्वरूप के निरूपण में मूलाधार-चक्र से लेकर सहस्रारचक्र तक अक्षरों की बीज मंत्रों के संयोजन से प्राप्त होती है, जिससे पता चलता है कि तंत्र किस प्रकार अक्षर विज्ञान है, विभिन्न देवताओं के जो स्वरूप-तंत्रशास्त्र में वर्णित है, उसका आधार अक्षर ही है तथा उन देवताओं का सम्बन्ध भी मानव शरीर ही है।

वस्तुतः विभिन्न मंत्रों का निर्माण, अक्षरों की विशिष्टता के आधार पर इस प्रकार किया गया है, जिससे उन मंत्रों के उच्चारण अथवा जप से उत्पन्न होने

वाली ध्वनि तरंगों द्वारा मानव शरीर के विशिष्ट संवेदनशील शक्ति केन्द्रों , पट्चक्रों में स्थित बीज मंत्रों को जागृत किया जा सके , निश्चय ही साधक जब विधिवत् उपासना द्वारा इसमें सफल हो जाता है , तब अपने उपास्य देवता की कृपा से वह असाध्य-से-असाध्य कार्य के संपादन में सक्षम हो जाता है।

तांत्रिक साधना से यद्यपि जीवन के हर क्षेत्र में अभ्युदय संभव है , किन्तु यह कोई सरल प्रक्रिया नहीं है। तांत्रिक साधना तलवार की धार पर चलने से ज्यादा खतरनाक है। इस साधना द्वारा निरापद अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिये उनके अनुरूप विधि , अवधि , असीम धैर्य और सम्यक् मार्ग-दर्शन की अपेक्षा होती है।



अवश्य पठनीय उद्धरण (सम्पादकीय)

सनातन धार्मिक ग्रन्थों की दो प्रणाली है , आगम तथा निगम। निगम वेद तथा आगम तन्त्र को कहते हैं। दोनों ही आवहमान काल से उपादेय माने जा रहे हैं। वेद शास्त्र एवं तन्निर्दिष्ट कृत्यविधान अति प्राचीन सत्य युगादि काल में , जब मनुष्य दीर्घजीवी , बलिष्ठ , तपस्वी , मेधावी तथा प्रज्ञावान् होते थे , विशेष उपयोगी थे। अर्वाचीन कलिकाल के अल्पायु , दुर्बल , असंयत तथा त्रितापदग्ध जीवों के उद्धार के लिए परम कारुणिक आशुतोष भगवान् महादेवजी ने तन्त्र शास्त्र की रचना कर सुगम पथ का प्रचार किया। प्रथम वेद की प्रामाणिकता के विषय में कहते हैं। ऋग्वेदादि वेदत्रयी परमात्मा के श्वास-प्रश्वास हैं। जैसे , श्वास-प्रश्वास प्रयत्नरहित अकृत्रिम प्रवाहित होता है , वैसे ही वेद भी परमात्मा से भी कृत्रिम प्रवर्त्तमान होने से वेद को अपौरुषेय कहा गया है। श्रुति में ही कहा गया हैह्नयथा

"अस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद्यद् ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेद इति। "

आगम की व्युत्पत्ति तन्त्रशास्त्र में इस प्रकार हैह्न

"आगतं पञ्चवक्त्रात्तु गतं च गिरिजानने ।
मतं च वासुदेवस्य तस्मादागमुच्यते ॥ "

अर्थात् शिवजी के पाँच मुखों से निकल कर पार्वतीजी के कानों में पड़ा एवं वासुदेव-विष्णु ने उसे समर्थन किया। इसीसे तन्त्र शास्त्र को आगम कहा गया है। उस आगम के ये लक्षण हैंह्

"सृष्टिं च प्रलयं चैव देवतानां तथाऽर्चनम्।
साधनं चैव सर्वेषां पुरश्चरणमेव च॥
षट्कर्मसाधनं चैव ध्यानयोगश्चतुर्विधः।
सप्तभिर्लक्षणैर्युक्तं त्वागमं तद्विदुर्बुधाः॥"

अर्थात्ह्सृष्टि, प्रलय, देवताओं की पूजा, सब कार्यों का साधन, पुरश्चरण, वशीकरणादि षट्कर्म का साधन तथा चार प्रकार का ध्यान योग इन सात प्रकार के लक्षणों से युक्त आगम को विद्वान् जानते हैं।

"शुद्धचित्तस्य शान्तस्य धर्मिणो गुरुसेविनः।
अतिभक्तस्य गुप्तस्य कुलज्ञानप्रकाशते॥"

मन्त्र भी तभी वीर्यवान् होता-फलोन्मुख होता जब उपयुक्त गुरु-मुख से प्राप्त हो।

'भवेद् वीर्यवती विद्या गुरुवक्त्रात् विनिःसृता।'

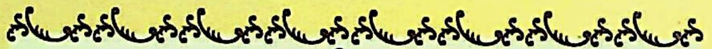
गुरु के योग्य वे हैं, जिनको मन्त्र चैतन्य की शक्ति प्राप्त हो।

काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा॥
बगला सिद्धिविद्या च मातङ्गी कमलात्मिका।
एता दशमहाविद्याः सिद्धिविद्याः प्रकीर्तिताः॥



हमारे यहाँ की प्रकाशित पुस्तकें

वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् भा.टी. पं. सीताराम झा	250/-	वास्तुराजवल्लभः	100/-
		पुत्तल विधान - भा. टी.	15/-
लघुपाराशरी-मध्यपाराशरी भा.टी. पं. सीताराम झा	50/-	प्रेतमंजरी - भा.टी.	80/-
		श्राद्धविवेक अर्थात् श्राद्धसंग्रह-भा.टी.	225/-
सारावली -पं. सीताराम झा	200/-	वनदुर्गा पटल	20/-
मानसागरी - पं. सीताराम झा	150/-	गृहरत्नभूषण - भा. टी.	20/-
मुहुर्त चिन्तामणि-पं. सीताराम झा	80/-	गृहनिर्माण-व्यवस्था - भा. टी.	20/-
ग्रहलाघवम् - पं. सीताराम झा	यं.	ललितासहस्रनामस्तोत्रम्	25/-
जन्मपत्र-व्यवस्था - भा.टी.	30/-	श्री सूक्तम् - भा. टी.	25/-
सत्यनारायण व्रत कथा - भा.टी.	25/-	सरयूपारीण ब्राह्मण वंशावली	50/-
विवाह - पद्धति - भा.टी.	40/-	केरल-प्रश्न-संग्रह - भा. टी.	20/-
उपनयन-पद्धति - भा.टी.	40/-	कनकधारास्तोत्रम्	[illegible]
विष्णुयाग पद्धति - मूल	90/-	श्रीगणेशसहस्रनामस्तोत्रम्	2[illegible]
रुद्रयाग-पद्धति - मूल	90/-	शिवसहस्रनामस्तोत्रम्	1[illegible]
शिलान्यास-पद्धति - भा.टी.	20/-	कालीकर्पूरस्तवः	2[illegible]
वास्तुशान्तिपद्धति - भा.टी.	25/-	पंचांगपूजनपद्धति-मूल	2[illegible]
कुण्डमण्डपसिद्धि - भा.टी.	20/-	कूपाराम मीमांसा पद्धति	25/-
प्रतीष्ठामहोदधी - मूल.	300/-	रुद्रस्वाहाकार विधीः	10/-
नारायणबलिप्रयोगः - भा.टी.	50/-	नवग्रह स्तोत्र संग्रह	40/-
ग्रहशान्तिप्रयोगः	150/-	श्रावणी (उपाकर्म) पद्धति-मूल	70/-
वास्तुमुक्तावली	60/-	एकोदिष्ट श्राद्ध पद्धति-भा.टी.	15/-
वास्तुसारणी - भा.टी.	90/-	पञ्चदान पद्धति - भा.टी.	15/-



पुस्तक प्राप्ति - स्थानम्

मास्टर खेलाड़ीलाल

संस्कृत पुस्तकालय

कचौड़ीगली, वाराणसी - 1

फोन नं0 0542-2392542, मो0 9450542839

मूल्य 20/-

